नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

सर्व के गति-सद्गति दाता, परम सद्गुरु भोलेनाथ शिव के अति स्नेही, अति प्रिय संतान भाइयो और बहनों,

नववर्ष के साथ-साथ नवयुग और नवकल्प की भी हार्दिक बधाइयाँ हों!

नववर्ष का यह आगमन, नवयुग के मनभावन नज़ारों को प्रत्यक्ष कर रहा है। सर्व आत्माओं की यह जो शुभ आश है कि सुख, शान्ति, संपत्ति से भरपूर नई दुनिया आनी चाहिए, वह अति शीघ्र पूरी होने वाली है।

कलियुग के अन्त और सतयुग के आगमन के संगमकाल की वर्तमान घड़ियाँ अति महत्वपूर्ण हैं। भोलेनाथ भगवान शिव अवतरित हो सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दे रहे हैं। इसी ज्ञान खज़ाने से आत्मा कमल समान पवित्र, शक्तिशाली, दिव्यगुण संपन्न तथा बन्धनमुक्त बन जाती है। समय की पुकार है, हम तीव्र पुरुषार्थी बनें। इसके लिए ध्यान रखें कि जैसा संकल्प हम करेंगे, वैसा ही वातावरण बनेगा। ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों को समय अनुसार सेवा में प्रयोग करते हुए असंभव को भी संभव कर दिखाएँ। एक बल एक भरोसे के आधार पर पवित्रता रूपी स्वधर्म में टिके रहें। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है।

दिल को आराम देने वाले दिलाराम भगवान की मीठी स्मृति में मन-बुद्धि को एकाग्र करते हुए सर्व पुराने भाव-स्वभाव से मुक्त हो जायें। नववर्ष में नये उमंग-उत्साह के साथ-साथ नव संस्कार धारण करें। पुरानी और परायी बातों को विदाई दें। निर्मल भावों के साथ नववर्ष का स्वागत करें। नये वर्ष में वरदानी भोलेनाथ शिव से स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशी के वरदान के साथ-साथ कदम-कदम पर सफलता जन्मसिद्ध अधिकार को भी हम सब प्राप्त करें। सर्व भाई-बहनों को नये वर्ष और नये युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन

बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- ब्रह्मा बाबा का दिव्य पुरुषार्थ.... 4
- भटकी आत्मा को मंज़िल....... 6
- पिताश्री द्वारा बच्चों, युवकों.... *(सम्पादकीय)* 7
- बाबा की नम्रता.................. 9
- विदेश में ईश्वरीय सेवा........ 10
- बाबा हमसफर..*(कविता)* 12
- बाबा का हाथ सदा सिर पर... 13
- वो प्यार भरा हाथ 16
- क्रोध के शमन की ओर 18
- सबको अपनेपन का अहसास .19
- स्मृति पुष्प..*(कविता)* 21
- समर्पणता से संपन्न 22
- बाबा ने कहा, बच्ची ध्यानी, ... ज्ञानी, योगी है 25
- बाबा ने कहा, बच्चा मन-बुद्धि से समर्पित है....................26
- सचित्र सेवा समाचार......... 30
- बाबा ने हर लिया मेरे मन को.32
- विश्व कल्याण सरोवर 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	90 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	90/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383
hindigyanamrit@gmail.com

संजय की कलम से ..

ब्रह्मा बाबा का दिव्य पुरुषार्थ

ब्रह्मा बाबा का 18 जनवरी, 1969 को अव्यक्तारोहण हुआ। उस रात्रि को उनका आत्मा रूपी हंस उड़कर नील गगन के पार अथवा प्रकाश के लोक में, अव्यक्त लोक में चला गया। प्रश्न उठता है कि उनके दिव्य पुरुषार्थ के ऐसे कौन-से आलोक बिन्दु रहे होंगे जिनके द्वारा उन्हें उस अनुपम स्थिति की उपलब्धि हुई और शिव बाबा के अंग-संग रहकर सृष्टि-संरचना के कार्य करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ? अगर उनके अलौकिक जीवन की शोभा-यात्रा पर दृष्टि डाली जाये तो उनके पुरुषार्थ की कई विशेषतायें सामने आती हैं जिनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं :-

विदेह स्थिति

सबसे पहली बात यह है कि उन्होंने देह और देही, रथ और रथी अथवा शरीर और आत्मा की भिन्नता का पाठ खूब पक्का कर लिया था। जैसे किसी सांसारिक आदमी को देह-अभिमान का पाठ पक्का होता है, वैसे ही विदेह अवस्था अथवा आत्मिक स्थिति उनके लिए सहज स्वभाव हो गई थी। प्रारंभ से, उन्हें जब से तारों की तरह आत्मा का ब्रह्मलोक से इस धरा पर आकर साकार रूप लेने का दिव्य साक्षात्कार हुआ था तथा अपने काका मूलचन्द की देह से आत्मा के निकलने का दृश्य दिखाई दिया था, तब से उन्होंने, निष्ठापूर्वक यह अभ्यास करना प्रारंभ कर दिया था कि 'मैं आत्मा हूँ, जसोदा (उनकी धर्मपत्नी) आत्मा है, राधिका (उनकी बहू) आत्मा है, सभी देहों में विराजमान आत्मायें हैं...' अर्थात् हरेक देहधारी और मित्र-संबंधी को उन्होंने आत्मिक दृष्टि से देखने का अभ्यास पूरा मन लगाकर करना शुरू कर दिया था और उस अभ्यास की परिपक्वता होने तक उन्होंने कभी भी अपने इस पुरुषार्थ को ढील नहीं दी थी, यहाँ तक कि जो कोई उनसे मिलने आता, न केवल वे उसे आत्मिक दृष्टि से देखते बल्कि उससे पूछते – 'बच्चे, किससे मिल रहे हो? यह कौन है? क्या इसे पहचानते हो? क्या आपको यह याद है कि मैं एक आत्मा हूँ?' वे प्राय: यह भी कहा करते थे कि 'जब कभी आप एक-दूसरे से मिलो तो अभिवादन करते समय एक-दूसरे से कहो – शिवबाबा याद है?'

वे कहा करते थे – 'बच्चे, एक-दूसरे के प्रति मित्रता निभाने की यही सच्ची रीति है कि एक-दूसरे को आत्मा और परमात्मा की याद दिलाओ। बच्चे, एक आँख में सदा मुक्ति और दूसरी आँख में जीवनमुक्ति रखो। यह देह तो कब्र दाखिल होने वाली है। इस क्षणभंगुर एवं नाशवान देह को देखते हुए भी इसके भान में न आओ। यह शरीर काम-विकार से पैदा हुआ है, पुरानी जुत्ती की तरह है, इससे क्या दिल लगाना? बच्चे, अगर देह से दिल लगाओगे तो अपना स्वर्गिक राज्य-भाग्य गँवा बैठोगे। बच्चे, यह अंतिम समय है, अंत में तो भक्त भी 'हरि बोल, हरि बोल' का अभ्यास किया करते हैं, अत: आप भी शिवबाबा को याद करते रहो ताकि यह स्थिति पक्की हो जाये। इस देह में फँसे रहोगे तो फिर आत्मा उड़ नहीं सकेगी।' तो जैसे हठयोग का अभ्यास करने वाले सारा दिन गोबर-लकड़ी जलाकर धूनी रमाये रहते हैं, बाबा 'आत्मा' और 'परमात्मा' ही की धुन जमाये रहते थे। इस प्रकार 'आत्मा, आत्मा' कहते-समझते वे हड्डी-माँस के कलेवर से तो पहले ही अलग हो चुके थे। हड्डियाँ तो वे सेवा में लगा चुके थे। तब वे फरिश्ते नहीं थे तो क्या थे?

जैसे एक नवजात पक्षी उड़ने का अभ्यास करते-करते एक दिन उड़ जाता है और मुक्त होकर आकाश में विचरता है और स्वतंत्रता की साँस लेता है, वैसे ही 'आत्मा हूँ, आत्मा हूँ' की स्मृति रूपी पुरुषार्थ से एक दिन वह आत्मा ज्ञान और योग के पंख लिये नील गगन से भी पार उस चाँदनी के जैसे प्रकाश वाले प्रकाशलोक में जा पहुँची। भक्त लोग किसी के शरीर

छोड़ने पर प्राय: कहा करते हैं कि 'वह आत्मा प्रभु को प्यारी हो गई।' इस प्रकार, वे भी सही अर्थ में प्रभु को प्यारे हो गये। प्रभु को प्यारे तो वे पहले भी थे क्योंकि उनके मन की लगन तो प्रभु के ही प्यार में मगन रहती थी।

कुछ भी नहीं चाहिए

उनके पुरुषार्थ में एक विशेषता यह भी थी कि उनके जीवन में न कोई मान-शान की इच्छा थी, न खान-पान की लालसा। न किसी से उनका लगाव था और न उनके लिए कोई आकर्षण का बिन्दु। 'बस, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए' – ऐसा उनके मन का दृढ़ भाव था। 'पाना था जो पा लिया, और क्या बाकी रहा!' – यह स्वरालाप उनके मन की वीणा पर सतत्, निरंतर, अंदर ही अंदर होता रहता था। उनकी श्वासों के स्वर इसी स्वर में समाये हुए थे। पैसे को तो वे हाथ में लेते ही नहीं थे। कोई महल-माड़ी, कोई विमान-गाड़ी या किसी शान-शौकत का स्पर्श भी उन्हें नहीं रहा था। सादगी की वे चैतन्य प्रतिमूर्ति थे। अत: पृथ्वी के आकर्षण तो मिट ही चुके थे।

अब घर चलना है

वे इस भूमंडल पर एक फरिश्ता तो पहले ही से भासित होते थे क्योंकि पृथ्वी पर होते हुए भी उनके पाँव पृथ्वी पर नहीं थे। बस 'अब घर चलना है, अब घर चलना है..' यह नाद उनके मन रूपी तंबूरे पर बजता रहता था। इस दुनिया से तो उन्होंने जीवन रूपी जहाज़ का लंगर उठा ही लिया था। ऐसा लगता था कि वे केवल वत्सों को तैयार करने के लिए ही रुके हुए हैं वरना जहाज़ तो सामान से भर चुका था और इस दुनिया रूपी बंदरगाह से रवाना होने के लिए तैयार था। किसी ने उन्हें माना या न माना, पहचाना या न पहचाना, उनके रास्ते में रुकावट डाली या सहयोग दिया – इनसे पार, वे बेफिकर बादशाह बन चुके थे।

हल्के-हल्के

इस प्रकार, वे यहाँ रहते भी सदा यात्रा पर थे। वे यहाँ तो थे परंतु यहाँ के नहीं थे और सभी प्रकार के फ़िकर से फ़ारिग होकर लाइट (हल्के) तो हो ही चुके थे। उन्होंने सब कुछ शिवबाबा पर छोड़ रखा था और शिवबाबा की चाबी ही से चलते थे। सारथी तो शिवबाबा ही था, वह जहाँ चाहे ले चले। बागडोर उसके हाथ में दे रखी थी। वे धरती के सब दृश्यों और रिश्तों से काफी ऊँचे उठ चुके थे। 'त्राहि-त्राहि' करते हुए इस संसार पर उन्हें दया आती थी। इसलिए वे प्रेम और वरदानों की वर्षा करते रहते थे।

रिश्ते-नाते नहीं रहे थे

उनके दैहिक तथा मानसिक रिश्तों-नातों की रस्सियाँ तो पहले ही से कट चुकी थीं। अत: जब रिश्ते पहले से ही नहीं रहे थे और धरती के आकर्षण भी पहले ही मिट चुके थे, तब फरिश्ता होकर उड़ने में क्या गुंजाइश रही होगी? जैसे उड़ने वाला गुब्बारा कच्चे धागे से बंधे हुए होने पर बच्चों के मन को बहलाता है और फिर हवा का झोंका आता है और वह उस धागे को भी तोड़कर 'टा-टा' करते उड़ जाता है, वैसे ही कुछ थोड़े-से हिसाब-किताब का कच्चा धागा अथवा बच्चों को तैयार करने की ज़िम्मेवारी शायद कुछ काल के लिए उन्हें रोके हुए थी। एक झोंका आने की जरूरत थी कि 'वो चले'! हाँ, ऐसा ही तो हुआ।

सब कुछ बाबा का है

एक बात जो उनके मन में अमिट छाप की तरह अंकित थी, वह यह कि वे सब कुछ बाबा ही का समझते थे। मालिक होते हुए भी वे बालक ही थे। उन्होंने कभी भी अपना तो कुछ समझा ही नहीं। तो जब उनका यह तन पहले से ही उनका नहीं रहा था, तब तो केवल 'आया परवाना और हुआ रवाना' वाली बात रह गई थी। शरीर के साथ संबंध तो उन्होंने पहले से ही नाममात्र ही कर दिया हुआ था, अब तो केवल शिवबाबा की तरफ से यह इशारा ही होने की ज़रूरत थी कि 'अब चले जाओ।' वर्ना ' हम तो सफर पर तैयार बैठे हैं' अथवा 'खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर कर चले' – यही उनकी स्थिति थी। वे अन्य सबको भी कहा करते थे कि बच्चे, एवररेडी रहो।

बाबा, बाबा...

वे शिवबाबा को तो 'बाबा' कहते

ही थे, अपने लिए भी 'मैं' शब्द की बजाय 'बाबा' शब्द का प्रयोग किया करते थे; उन्हें भी तो सभी 'बाबा' कहकर ही संबोधित करते थे न! अत: वह (शिव) बाबा, यह (ब्रह्मा) भी बाबा, तब अंतर ही कितना रह गया था? कभी वह बाबा, कभी यह बाबा और कभी दोनों बाबा! इस प्रकार 'बाबा, बाबा' कहते-कहते एक दिन ऐसा आया कि दोनों ने इकट्ठा रहने की ठान ली। ब्रह्मा बाबा के मन में यह भाव रहा होगा कि यद्यपि मन तो दोनों के मिले हुए हैं परंतु खुदा और खुदा-दोस्त की यह दूरी और यह जुदाई कब तक? ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को कह दिया होगा कि 'बाबा, बस अब मैं आ रहा हूँ' और भोले शिवबाबा तो कभी उनकी बात टालते ही नहीं थे। अत: शिवबाबा ने भी कह दिया होगा कि 'अच्छा तो फिर चले आओ।' फासला तो कोई पहले भी था नहीं लेकिन अगर कुछ रहा भी होगा तो वह भी न रहा।

व्यर्थ और नकारात्मक की समाप्ति

यूँ तो उनके निकट जो लोग भी कभी बैठते थे, उन्हें पहले ही से यह अनुभव होता था कि कुछ शीतल-सी झिलमिल-झिलमिल, कुछ भीनी-भीनी सी सुगंधि, कुछ सुख की रश्मियाँ उनके मन को भी सराबोर (गीला) कर रही हैं। बाबा की उपस्थिति में उन्हें लगता कि उनके विकार शांत हो गये हैं, उनकी बुराइयाँ बंद हो गई हैं, उनकी कमज़ोरियाँ मिट-सी गई हैं और उनके मन में यह आशा-प्रदीप हो गई है कि वे भी एक अच्छे इंसान बन सकते हैं। कारण यह था कि ब्रह्मा बाबा कभी नकारात्मक रीति से सोचते ही नहीं थे। वे कभी किसी के अवगुणों का चिन्तन करते ही नहीं थे। उनका समय, उनके संकल्प, उनकी शक्तियाँ कभी बेकार की ओर जाती ही नहीं थी। वे तो वेस्ट को बेस्ट अथवा निकृष्ट को श्रेष्ठ और व्यर्थ को समर्थ बनाने वाले थे। वे बिगड़ी को संवारने वाले थे। तब उनकी उपस्थिति में दूसरों का मन भी अपनी कमी और कमज़ोरियों से हटकर आत्मविश्वास और उत्साह से भरपूर क्यों न हो जाता? अब उनके संस्कारों तथा व्यवहारों में तो व्यर्थ की समाप्ति और सामर्थ्य की प्राप्ति हो गई थी और फरिश्तों का यही तो विशेष लक्षण है कि उनमें व्यर्थ और नकारात्मक नहीं होता। अत: पूर्णता को प्राप्त कर वे पुनीत धाम को चले गये। वे समर्थ बन गये तो फिर सामर्थ्य उन्हें ऊँचाइयों पर ले गया। ❖

भटकी आत्मा को मंज़िल मिली

मधुरमा पाण्डेय, अमलीपदर, देवभोग

बचपन से ही आत्म-संतुष्टि की खोज में लगी आत्मा ने भोग की नश्वर वस्तुओं को नकारते हुए कहा कि ये तुच्छ चीज़े हैं। फिर सुख खोजा नाते-रिश्तों में। आत्मा से पुन: कहा, इन सबके शरीर छोड़ते ही उदासी के सिवा कुछ भी नहीं। फिर धर्मग्रंथों का सतत् अध्ययन कर तर्क-वितर्क के जाल में उलझते रहे।

यह उलझन और भटकन तब मिटी जब शिव बाबा ने बुलाया कि बच्ची, मेरे पास आ, तेरा भटकना मुझसे अब देखा नहीं जाता, खुशी का अविनाशी खज़ाना मैं तुम्हें दूँगा। पर मेरे अहंकार ने कहा, मैं क्यों जाऊँ? मेरी क्या गरज? फिर सुख की खोज होने लगी नशे की वस्तुओं में। आत्मा ने इन्हें भी नकारते हुए कहा, ये तो तन, मन, धन को खोखला कर देती हैं। अब मन, बुद्धि, संस्कार ने भटक-भटक कर हार माननी शुरू कर दी। पर बाबा ने हार नहीं मानी। निकट के ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में सात दिवसीय राजयोग का अभ्यास करवाकर ही दम लिया। एक सुखद और अद्भुत आश्चर्य! सहज, सरल व नि:शुल्क तरीके से मैं भटकी हुई आत्मा बाबा से वर्सा लेने की उत्तराधिकारी बन गई। बस, अब जीवन का एक ही लक्ष्य है राजयोग का सतत् अभ्यास, अधिक से अधिक आत्माओं को परमपिता परमात्मा से जोड़ना, ज्ञानामृत पत्रिका से जोड़ना। शुक्रगुजार हूँ ब्रह्माकुमारीज़ बहन-भाइयों की जो निमित्त बने हैं। ❖

सम्पादकीय ..

पिताश्री द्वारा बच्चों, युवकों, वृद्धों का अनूठा सशक्तिकरण

इस कलियुगी सृष्टि में हरेक मनुष्य में अवगुण तो भरे ही पड़े हैं परंतु इस 'ज्ञान-यज्ञ' में आकर जो कोई भी ज्ञान लेकर आगे बढ़ना चाहता, बाबा उसके अवगुणों को न देख, उसके गुणों का वर्णन कर, उसमें उत्साह और खुशी भर देते और उसके गुणों द्वारा उसे जन-सेवा में लगाकर उसका कल्याण कर देते।

बच्चों का सशक्तिकरण

छोटे बच्चों के लिए बाबा कहते कि 'ये बच्चे तो 'महात्मा' हैं। ये काम वासना की उल्टी सीढ़ी पर तो चढ़े ही नहीं हैं। बच्चे भोले होते हैं और भोलों का ही तो भगवान है।' पिताश्री बच्चों को कोमल कलियों अथवा नन्हें पौधों के रूप में देखते थे और कहते थे कि इनसे बहुत कोमलता और मधुरता से व्यवहार करने की ज़रूरत है। बाबा साकार रूप में भी उन्हें छोटा समझकर उनकी उपेक्षा नहीं करते थे बल्कि उन्हें बहुत ही महत्त्व देते थे। वे कहते थे कि छोटे बच्चों का मन साफ स्लेट की तरह है जिस पर ज्ञान अच्छी तरह लिखा जा सकता है, उनके संस्कारों को अभी मोड़ना सहज है। वे कहते थे कि ''बच्चे सरलचित्त और ब्रह्मचारी तो हैं ही, अत: इन बच्चों को दिव्य साक्षात्कार भी हो सकते हैं और यदि ये सहज योग को सीख जायें तो ये बड़ों को भी ईश्वरीय मार्ग पर लगा सकते हैं क्योंकि ये 'पवित्र पौधे' हैं।'' बाबा उन्हें आत्मा की दृष्टि से देखते हुए उनके कल्याण के लिए हर कोशिश करते। माता मदालसा का उदाहरण देते हुए बाबा कहा करते कि बच्चों को ज्ञान की लोरी देनी चाहिए।

बाबा की अनूठी शिक्षा पद्धति

पिताश्री ने साकार रूप में बच्चों के कल्याण के लिए जितना परिश्रम किया उतना शायद ही आज तक किसी ने किया होगा। उन्होंने न केवल वर्णमाला को आध्यात्मिक ज्ञान का पुट दिया बल्कि बच्चों के लिए ज्ञान-युक्त संवाद और गीत आदि भी बनाये। जब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना हो रही थी तो भी उन्होंने बच्चों और बच्चियों के लिए स्कूल खोले जो हर प्रकार से अनुपम थे। उनमें न केवल भाषा और गणित इत्यादि का ज्ञान कराया जाता था बल्कि बच्चों को नैतिक एवं सरल आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। वहाँ बच्चों को मारना-पीटना मना था, उन्हें समझाया ही जाता था। उन्हें एक-दूसरे से आत्मिक नाते से व्यवहार करने की सीख दी जाती थी। उनके उठने-बैठने, खाने-पीने, बोलने-चलने, सोने-धोने के तरीकों में दिव्यता लाई जाती थी। कितने ही शिक्षा-विशेषज्ञों ने वहाँ स्वच्छता, शान्ति, अनुशासन, नैतिकता, सहयोग इत्यादि को देख उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी जोकि तत्कालीन समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हुई थी। उस शिक्षा-प्रणाली में पूर्वी और पश्चिमी पद्धतियों का समावेश था और बच्चे वहाँ एक कुल की तरह रहते थे। पढ़ाई का व्यवहारिक जीवन के साथ संबंध था और पढ़ाने वाले भी आत्म-निष्ठता के अभ्यासी तथा पवित्रता-पथ के अनुगामी थे।

युवकों का सशक्तिकरण

युवा वर्ग को बाबा कहते, 'इनका तो है ही विद्यार्थी जीवन। ये ब्रह्मचारी तो हैं ही, इनके लिए ज्ञान धारण करना सहज है क्योंकि इस आयु में बुद्धि गृहस्थ-व्यापार की चिन्ताओं से छूटी हुई होती है। बच्चे, वास्तव में यह जो कहा है कि विद्यार्थी जीवन सर्वोत्तम जीवन-भाग है' – यह वास्तव में इस ईश्वरीय विद्या के अध्ययन के बारे में ही सत्य है क्योंकि इसमें अपार खुशी है। अत: कहावत यूँ होनी चाहिए – 'गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ इज़ द बेस्ट' अर्थात् ईश्वरीय विद्या वाला विद्यार्थी-जीवन सर्वश्रेष्ठ है। जवानी में मनुष्य पुरुषार्थ अच्छा कर सकता है क्योंकि यंग ब्लड होता है। जिस्मानी सेवा में भी जवानों को ही

भर्ती करते हैं। यह भी तो रूहानी सेना है, इसमें भी स्फूर्ति से काम करने वाले चाहिएँ। जवानी में पक्की धुन लग जाती है। अत: यदि ये लोग आत्मा की सगाई परमात्मा से कर लें तो ये बहुत कल्याण कर सकते हैं।' उनकी ऐसी मधुर बातों को सुनकर युवावर्ग के लोग इस रूहानी सेना के पक्की लगन वाले, अथक कार्यकर्त्ता बन जाते और अपने मन की सगाई परमात्मा से करके सच्चे योगी बन जाते।

इस प्रकार, शिव बाबा और पिताश्री ने युवा वर्ग के लिये जो कार्य किया, वह अपनी प्रकार का अद्वितीय ही है। अन्य लोगों ने तो युवा शक्ति को समाज के निर्माण कार्य में लगाने की ओर बहुत बाद में, जब युवा-शक्ति तोड़-फोड़ में लग रही थी तब ही ध्यान दिया। परंतु शिवबाबा ने तो पिताश्री द्वारा सन् 1937 में ही यह कार्य प्रारंभ कर दिया था। जिन लड़कों और लड़कियों को लोग अनुभव-शून्य, अविकसित और महान् कार्यों के अयोग्य समझते थे, पिताश्री ने उन्हीं को देश और समाज के कल्याण के निमित्त बनाया। युवा वर्ग में उमंग-तरंग, उत्साह, उम्मीदें और शक्ति का आधिक्य तो होता ही है। पिताश्री उन्हें सही लक्ष्य और मार्ग देने के निमित्त बने जिससे वे समाज के कल्याण में जुट गये।

वृद्धों का सशक्तिकरण

कोई बूढ़ा होता तो यह सोचता कि 'मैं तो अब किसी काम का नहीं रहा। घर से, बाहर वालों से, सब ओर से फालतू हूँ।' परंतु ऐसे मनुष्य जब बाबा के कमलमुख से ये शब्द सुनते तो उत्साहित हो जाते – 'जो लोग वृद्ध हैं, वे बहुत ही सर्विस (सेवा) कर सकते हैं क्योंकि वे अनुभवी हैं। वे यदि ईश्वरीय ज्ञान की बातें दूसरों को अपने अनुभव सहित सुनायेंगे तो सुनने वालों को वे बातें जंच जायेंगी। देखो, शिवबाबा ने भी वृद्ध तन का ही तो आधार लिया है ना। अत: वृद्ध तो मेरे हमशरीक (मेरे ही वर्ग के) हैं..।'

इस तरह की बातें सुनकर और बुढ़ापे में भी अपने प्रति बाबा के मुख से 'बच्चे' शब्द सुनकर वे भी फिर बालक की तरह ईश्वरीय ज्ञान का अध्ययन करते और फिर दूसरों को भी देने की सेवा में जुट जाते। गोया वे बुढ़ापे में फिर से विद्यार्थी जीवन का और बाल्यकाल का अनुभव करते। वे नोट-बुक और पैन लेकर प्रतिदिन ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आने लगते और कोई पूछता कि कहाँ जा रहे हो तो कहते कि 'हम ईश्वरीय स्कूल में पढ़ने जा रहे हैं।' दादा, बाप और बच्चा तथा बच्ची एक ही ईश्वरीय पाठशाला में नित्य पढ़ने चल देते और अपनी हाज़िरी का ख्याल रखते।

साक्षर-निरक्षर का सशक्तिकरण

यदि कोई व्यक्ति पढ़ा-लिखा होता तो बाबा कहते – 'यह तो बहुत लोगों का कल्याण कर सकता है, लिट्रेचर लिखने और छपवाने में, समाचार पत्रों में ईश्वरीय संदेश प्रकाशित करवाने में और ईश्वरीय ज्ञान के भाषणों की तैयारी कराने में जुटकर यह बहुतों का शुभाशीर्वाद ले अपना भाग्य बहुत ऊँचा बना सकता है। इस बच्चे का ड्रामा में अच्छा ही पार्ट है।' यह सुनकर उस व्यक्ति का मन खुशी से पुलकित हो उठता और ईश्वरीय सेवा में जुट जाता।

कोई अनपढ़ होते और सोचते कि ''हम तो ईश्वरीय सेवा नहीं कर सकते।'' तब बाबा उन्हें कहते, ''बच्चे, आप पढ़े हुए नहीं हैं तो क्या हुआ? केवल 'अल्लिफ़' और 'बे' ('अल्लिफ' अल्लाह अर्थात् परमात्मा का वाचक है और 'बे' उससे प्राप्त होने वाली स्वर्ग की बादशाही का वाचक है) – ये दो बातें ही तो बतानी हैं और सभी को इतना ही तो बताना है कि परमपिता परमात्मा शिव को याद करो और पवित्र बनो तो आपको स्वर्ग का पूर्ण पवित्र दैवी राज्य-भाग्य मिलेगा, इसमें क्या कठिनाई है?''

शिवबाबा और पिताश्री ने सभी वर्ग की मनुष्य आत्माओं को एक साथ संजोकर, मनुष्य से देवता बनने का

लक्ष्य देकर, पवित्रता का मार्ग बताकर उनमें ऐसी तो प्रेरणा-शक्ति भर दी कि वे संसार के समस्त आकर्षणों को लांघकर, देश और संसार के नवनिर्माण के कार्य में पूर्णतया जुट गये। आज उसका सुमधुर फल साफ दिखाई दे रहा है। युवा पीढ़ी के जो बालक-बालिकायें अथवा युवक-युवतियाँ सामान्य रीति से अपने जीवन को खाने-पीने, पहनने और घूमने के चस्कों में गुज़ार देते थे और धर्म, धारणाओं और संयम को बुढ़ापे की वस्तु मानकर चल रहे थे, उन्हें भी प्रेरणा दी। उन्होंने सभी इंद्रियों के प्रलोभनों को ताक पर रखकर सादगी, सात्विकता और सेवा के जीवन को ऐसा तो अपनाया कि वे आबालवृद्ध हजारों-लाखों लोगों के सामने उदाहरण बन गये। कुछ वर्ष पहले जिन्हें समाज किसी गिनती में नहीं लेता था, आज वे भी अच्छे कार्यकर्त्ता, कुशल वक्ता, स्वरूपनिष्ठ योगी, सफल सुधारक और समाज को दिशानिर्देश देने के कार्य में अर्पणमय अध्यात्म-सेवी बने हैं।

– ब्र.कु.आत्म प्रकाश

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नववर्ष की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ

बाबा की नम्रता

ब्रह्माकुमार करुणा, शान्तिवन

मेरा सौभाग्य रहा जो बाबा, मम्मा और दादी प्रकाशमणि जी के साथ बहुत लंबा आध्यात्मिक जीवन बिताने का मौका मिला।

सन् 1960 में पहली बार ब्रह्मा बाबा से मिला, बाबा ने मुझे देखा और दोनों हाथ पसारकर कहा, 'आओ बच्चे' और मुझे गले लगा लिया। मैं भगवान के रथ (ब्रह्मा बाबा) से मिलने आया था। हमने भक्ति में पढ़ा था कि एक भक्त को जब धर्मराज लेने आया तो उसने शिवलिंग को पकड़ लिया, फिर धर्मराज को वापस जाना पड़ा पर यहाँ भगवान ने हमको अपनी शरण में ले लिया। मुझे हिन्दी बहुत कम आती थी। मैं बाबा से कैसे बात करूँ, यह सोच ही रहा था कि बाबा ने कहा, 'Yes son', मैं खुश हो गया। अरे, बाबा को अंग्रेजी भी आती है। बाबा जब आत्माओं से मिलते थे तो बाबा को उनका भविष्य नज़र आता था।

सिर्फ बाबा की बात नहीं है, मम्मा भी कम नहीं थी, मम्मा के अंदर परखने की शक्ति बहुत थी। मैं मम्मा से मिलने गया, जैसे ही मम्मा ने देखा, कहा, अरे, यह तो कल्प पहले वाला बच्चा है। मुझे समझ नहीं आया क्योंकि हिन्दी इतनी नहीं आती थी, आज समझ में आता है।

एक बार मैंने बाबा से पूछा, बाबा, मुझे क्या करना है? बाबा ने कहा, जो मैंने किया, वही तुम्हें करना है। मैंने सोचा, जैसे बाबा ने सब कुछ छोड़ दिया, वही मैं भी करूँगा। मैंने कहा, बाबा, मैं आबू से वापस नहीं जाऊँगा। बाबा ने कहा, मैंने यह थोड़े ही कहा है। जैसे बाबा ने अपना तन, मन, धन सफल किया, वैसे तुम्हें भी करना है।

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री को बाबा से मिलाने आबू लाया। उनमें अहम् भाव बहुत था, किसी के आगे झुकते नहीं थे। हिस्ट्री हॉल में बड़ी कुर्सी पर उन्हें बिठाया। बाबा अंदर आए। बाबा ने जैसे ही मुसकराते हुए कहा, आओ बच्चे, वह एकदम उठ खड़ा हुआ। बाबा खुद गद्दी पर नहीं बैठे। बाबा ने गद्दी दिखाते हुए कहा, आओ बच्चे, यहाँ बैठो। उसे समझ नहीं आया, क्या करूँ क्योंकि बाबा ने उसे अपनी गद्दी पर बैठने का इशारा किया था। फिर बाबा बोले, कोई बात नहीं, नीचे बैठ जाते हैं। यह कहकर बाबा नीचे बैठ गए। वह व्यक्ति, जो ज़िन्दगी में कभी नीचे नहीं बैठा, बाबा के सामने नीचे ही बैठ गया। बाबा की नम्रता ऐसी थी जो औरों को भी नम्र बना देती थी। ❖

विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 2

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में हमने लिखा था कि हम छह डेलीगेट्स विदेश में ईश्वरीय सेवार्थ गये और पहले लंदन, फिर न्यूयार्क में ईश्वरीय सेवायें कीं। जब हम न्यूयार्क में थे तब लंदन में शील इंद्रा दादी ने वहाँ के पुराने सिंधी बहन-भाइयों को तैयार किया और सबसे निमंत्रण पत्र लिखवा कर मधुबन भेजा। मधुबन से स्वीकृति मिल गई कि लंदन में पहले-पहले सेवाकेन्द्र की स्थापना की जाये। हम जब पीटसबर्ग (एक जमाने में अमेरिका की राजधानी) से वापिस न्यूयार्क आये तो हमने न्यूयार्क की योग सिखाने वाली संस्था Yoga Guild में प्रदर्शनी करने की तैयारी की। सबसे पहली जरूरत पड़ी प्रदर्शनी के चित्रों को रखने के लिए टेबल्स की। हमने टेलीफोन डायरेक्टरी में बड़े अक्षरों में फर्नीचर किराये पर देने वाली एक कंपनी का विज्ञापन देखा, उसे फोन किया और 15 टेबल्स का भाव पूछा। उन्होंने कहा कि एक टेबल का एक दिन का तीन डॉलर किराया लगेगा। हमें 14-15 दिनों के लिए फर्नीचर चाहिए था। हमने कहा कि हमें तो सेवा करनी है। उसने अपने सेठ के पास हमें भेज दिया। सेठ को मालूम चला कि हम फर्नीचर राजयोग प्रदर्शनी के लिए ले रहे हैं तो उसने कहा कि मैं भी योग करता हूँ। आप हमारे देश में योग सिखाने आये हैं, हम अवश्य ही टेबल तथा टेबल क्लॉथ आपको फ्री में देंगे। फिर हम उनके मैनेजर से मिले। मैनेजर ने एक विचित्र सवाल पूछा, हम टेबल पर कौन-सा रंग पेंट करके दें? हमने पूछा कि रंग पेंट करने की क्या जरूरत है? उसने कहा कि हमारा यहाँ का उसूल है कि जिस दीवार के पास टेबल रखा जायेगा, उस दीवार के रंग के अनुसार हम टेबल को रंग करते हैं तथा उसी रंग का ही टेबल क्लॉथ देते हैं। हम तो आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि भारत में तो कोई भी डेकोरेटर टेबल को रंग करके नहीं देता। हमें अमेरिकन संस्कृति का यह विशेष अनुभव हुआ।

बाद में हम प्रदर्शनी का प्रचार करने के लिए छोटा पर्चा (Leaflet) छपवाने गये। वहां हमें 300 लीफलेट के लिए 9 डॉलर चुकाने पड़े। हमने उनसे निवेदन किया कि आप हमें सेवार्थ लीफलेट फ्री में छापकर दो तो उन्होंने कहा कि हम ये 9 डॉलर केवल कागज की कीमत ही ले रहे हैं। तब हमने पहली बार अमेरिका में अपनी जेब से खर्च किया। दूसरे दिन सुबह योग में अव्यक्त बापदादा से रूहरिहान करते हुए मैंने बाबा से सवाल पूछा कि हमें ये 9 डॉलर क्यों देने पड़े तब बाबा का जवाब मिला कि मेरा साथ नहीं होता तो आपको मालूम पड़ता कि यहाँ की अर्थव्यवस्था कितनी महंगी है। मेरे सहयोग के कारण आपको सब चीजें बिना मूल्य के आसानी से मिल रही हैं।

बाद में तो प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। हमारे मित्र और उनके परिवार वाले भी आये। अखबारों द्वारा भी प्रचार किया। वहाँ जितनी भी योग की संस्थायें थी, उन सबसे संपर्क किया, निमंत्रण दिया। कई आये, प्रदर्शनी देखी और प्रभावित होकर गये। इस प्रकार प्रदर्शनी रूपी विहंग मार्ग की सेवा द्वारा अमेरिका के लोगों में ज्ञान का बीज डलता गया।

धीरे-धीरे हमें अन्य स्थानों से भी प्रदर्शनी एवं प्रवचन के लिए निमंत्रण मिलते रहे। उस जमाने में न्यूयार्क में सबसे ऊंचा भवन एम्पायर स्टेट बिल्डिंग था। उसके बाजू की गली में प्रदर्शनी करने के लिए एक संस्था की तरफ से निमंत्रण मिला। प्रदर्शनी करने से पहले बहुत सुंदर अनुभव बाबा ने कराया। जब हम मधुबन से विदेश सेवा के लिए विदाई ले रहे थे तब अव्यक्त बापदादा ने श्रीमत दी थी कि कोई भी सेवा का कार्यक्रम प्रारंभ करने से पहले तीन मिनट मुझे याद

करना। हम एम्पायर स्टेट बिल्डिंग के बाजू की गली के योग केन्द्र के अंदर प्रदर्शनी करने जा रहे थे। लिफ्ट तक पहुँच गये। तब याद आया कि आज हमने तीन मिनट बाबा को याद नहीं किया। फौरन फ्लैट में वापस पहुँचे। जैसे ही हम योग में बैठे, प्यारे अव्यक्त बापदादा ने शील इंद्रा दादी को अपने पास सूक्ष्मवतन में बुला लिया और कहा, बच्चे, आपने सब तैयारी तो की पर एक छोटी-सी तैयारी बाकी रह गई। शीलइंद्रा दादी ने कहा, बाबा, हमें याद नहीं, कौन-सी तैयारी बाकी है? तब बाबा ने कहा, बच्चे, आपने उद्‌घाटन के लिए दीप तो लिए हैं पर माचिस लेना भूल गये हो। यहाँ पर भारत की तरह जिज्ञासु नहीं हैं जिन्हें आप कहो और वे दौड़कर ले आयेंगे। इसलिए माचिस लेकर प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करने जाइये। तब हम सबने आपस में सोचा कि देखो बाबा हम बच्चों की हर बात का कितना ध्यान रखते हैं और हम सब प्रभु प्यार की मस्ती में मस्त हो गये।

प्रदर्शनी के बाद लोग हमारे पास आने लगे। उस समय के बड़े-बड़े योगियों के आश्रमों में भी हमें प्रदर्शनी तथा प्रवचन करने का निमंत्रण मिलता गया। इस सेवा के दौरान एक सुंदर अनुभव हुआ। हम तो बाबा की श्रीमत के आधार पर किसी से कोई भी फीस या शुल्क नहीं लेते थे। लोग आश्चर्यचकित होते थे क्योंकि जो लोग वहाँ योग सिखाते थे, वे एक घंटा योग सिखाने का 60 डॉलर तथा आधा घंटा सिखाने का 30-35 डॉलर तक शुल्क लेते थे। हमारी नि:शुल्क सेवा का समाचार सभी योगियों के पास पहुँचने लगा। उनके दिलोदिमाग में हलचल मच गई कि ब्रह्माकुमारियाँ हमारी मार्केट बंद कराने आये हैं। वे अपने प्रतिनिधियों को हमारे पास भेजते थे। ऐसे एक प्रतिनिधि को हमने कहा कि हम तो शिवबाबा की श्रीमत के आधार पर नि:शुल्क सेवा करते हैं। इस पर उस प्रतिनिधि ने कहा कि आप शिवबाबा को कहो कि हम भी उनके योगी बच्चे हैं, हमें अपने खर्च के लिए पैसे की जरूरत है। आप योग सिखाने का शुल्क जरूर लीजिए, अपने पास नहीं रखिए, हमें दे दीजिये। इस प्रकार से आपका नियम भी रहेगा और हमारा आजीविका का खर्च निकल जायेगा। हमने उन्हें कहा कि हम यहाँ थोड़े समय ही रहने वाले हैं, फिर आगे जाने वाले हैं। इससे उनके मन में हमारे प्रति जो भय उत्पन्न हुआ था, वह दूर हो गया। हमने उन्हें भारत, माउंट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।

न्यूयार्क में सेवा बहुत बढ़ गई जिस कारण हमें वहाँ दो मास से अधिक रहना पड़ा तब मधुबन से दादियों का पत्र आया कि आपको तो एक सेवाकेन्द्र पश्चिम में और एक पूरब में खोलना है। पश्चिम में तो लंदन में आपने सेवाकेन्द्र खोलने की तैयारी कर ही ली है। इसलिए अभी अमेरिका में सेवाकेन्द्र स्थापन नहीं करना है, अभी आप पूरब में सेवाकेन्द्र स्थापित करो। हम लोगों ने आपस में विचार करके शील इंद्रा दादी द्वारा बाबा को संदेश भिजवाया। बाबा ने हम छह के ग्रुप का दो भागों में विभाजन किया। मुझे, ऊषा जी तथा डॉ.निर्मला बहन को मॉन्ट्रियल (कैनेडा) आदि स्थानों पर भेजा तथा शीलइंद्रा दादी, जगदीश भाई और रोजी बहन को अमेरिका के दक्षिणी भाग जमैका आदि स्थानों पर भेजा। यह तय हुआ कि 15 दिनों तक अमेरिका में सेवा करने के बाद हम हांगकांग पहुँच जायेंगे। इस प्रकार से दो ग्रुप बने।

प्रदर्शनी के चित्र हम लोगों ने हवाई जहाज से हांगकांग भेज दिये ताकि वहाँ पर विहंग मार्ग की सेवा हो सके। बाद में जगदीश भाई का ग्रुप अमेरिका के दक्षिण की तरफ गया और हम दूसरे दिन कैनेडा में मॉन्ट्रियल जाने के लिए निकले। मान्ट्रियल एयरपोर्ट पर एक विचित्र घटना हुई। हम एयरपोर्ट से बाहर निकलकर लेने आने वाले भाई का इंतजार कर रहे थे। तभी जोर से आवाज आई, 'ब्रह्माकुमारी बहनें'। एक भाई आकर निर्मला बहन और ऊषा जी के पाँव पड़ गया। कहने लगा, मैं आपका भारत का स्टूडेन्ट हूँ, यहाँ अपने बच्चों के पास आया था, अब

वापस भारत जा रहा हूँ। उसने मुझे देखकर कहा, आप अमेरिका में क्या करते हैं? मैंने कहा, मैं ब्रह्माकुमार हूँ। हमारा ये तीन का ग्रुप है। उसने मुझे देखकर कहा कि आप तो ब्रह्माकुमार नहीं लगते। आपने ब्रह्माकुमार का ड्रेस नहीं पहना हुआ। आपने तो वेस्टर्न ड्रेस कोट-पेंट पहना हुआ है। इन बहनों ने तो ब्रह्माकुमारी का ड्रेस पहना है इसलिए मैं इन्हें पहचान पाया। उसकी बात सुनकर मुझे ब्रह्मा बाबा के साथ हुआ मेरा वार्तालाप याद आया। मैंने ब्रह्मा बाबा को कहा था कि बाबा, जैसे आपने बहनों का यूनीफॉर्म तय किया है, वैसे भाइयों का भी कीजिये। तब ब्रह्मा बाबा ने हंसी में जवाब दिया था कि मैं तुम्हारा कोट-पैंट नहीं पहन सकता और तुम मेरी धोती नहीं पहनोगे इसलिए भाइयों का यूनीफॉर्म निश्चित कैसे होगा? बहनों का तो ड्रेस निश्चित करना पड़ता है क्योंकि शिवबाबा ने बहनों पर ज्ञान का कलश रखा है। ब्रह्मा बाबा के साथ हुआ यह वार्तालाप याद आते ही मैंने उस भाई से हँसी में कहा कि हम भाइयों का कोई यूनीफॉर्म अभी तक नक्की नहीं हुआ है इसलिए हमें यह पहनना पड़ता है।

मॉन्ट्रियल में दो दिन हम एक पंजाबी युगल के पास ठहरे। वहाँ से टोरंटो आदि शहरों से होते हुए सेन फ्रांसिस्को पहुँचे। सेन फ्रांसिस्को में अहमदाबाद के एक भाई के बच्चे पढ़ाई पढ़ते थे। उनके पास हम रहे और वहाँ ही हमारे पास फोन आया कि लंदन में टेनीसन रोड पर एक मकान मिल रहा है तो आप किसी एक को लंदन भेजो ताकि वहाँ ऑफिशियल सेवा शुरू हो जाये। तब शीलइंद्रा दादी और उनके साथियों से राय-सलाह करके निर्मला बहन का सेन फ्रांसिस्को से लंदन जाने का कार्यक्रम बना। वे 22 सितंबर, 1971 को लंदन जाने के लिए निकले और 23 सितंबर को लंदन पहुँचे। वहाँ के बहन-भाई, मुरली दादा तथा रजनी बहन उन्हें सीधा ही टेनीसन रोड के मकान पर ले गये तथा 23 सितंबर, 1971 की शाम को विधिवत् विदेश के पहले सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई। इस तरह हमारी विदेश यात्रा का पहला चैप्टर समाप्त हुआ।

सेन फ्रांसिस्को से हम लॉस एंजिल्स गये। वहाँ भी हमारे एक भारतीय मित्र का घर था। उनके यहाँ रहे और सेवायें की। वे मुझे तथा ऊषा जी को डिज्नी लैण्ड लेकर गये। वहाँ से हम लोग होनोलूलू गये। होनोलूलू में वाटूमल दादा (जिनकी स्मृति में उनके बच्चों ने आबू के ग्लोबल हॉस्पिटल में धन का सहयोग दिया) के पास गये। उन्होंने सलाह दी कि आप अफ्रीका में लागोस आदि शहरों में जाकर सेवा करें, वहाँ के सिंधी लोग संस्था को आगे बढ़ा सकते हैं। वहाँ से हम लोग हांगकांग पहुँचे। जगदीश भाई और उनके साथी भी उसी दिन पहुँचे। वहाँ हम पाँचों ने ईश्वरीय सेवा शुरू की। हम दोनों भाई जापान भी गये और एक योग सिखाने वाली संस्था के मेहमान बने। वहाँ हम एनानारकियो संस्था में भी गये। यह वह संस्था है जहाँ विश्व धर्म परिषद हुई थी और हमारी आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी, रतनमोहिनी दादी जी एवं दादा आनंद किशोर जी गये थे। उन्हें हमारी दादियों से हुई मुलाकात याद थी। उन्होंने हमारा बहुत अच्छी तरह से स्वागत किया। हांगकांग में कैसे सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई, इसके बारे में अगले लेख में लिखेंगे। ❖

बाबा हमसफर

ब्र.कु.किरण देशपांडे,
सुदामानगर, इंदौर

ना है चिन्ता गर ना ले कोई खबर,
रात बीत जायेगी और आएगी सहर,
बहुत ही सहज लगती जीवन डगर,
बाबा जब से बन गया मेरा हमसफर।

चाहे कोई बाधा आये या कोई भँवर,
अब नहीं कोई डर, ना ही कोई फिकर,
बाबा की मेहर आती हर कदम नज़र,
बाबा जब से.........................

पुरानी दुनिया आती खाली नज़र,
एक बाबा याद आता शामो सहर,
अब नहीं आ पाए कोई दुख की लहर,
बाबा जब से.........................

गम नहीं है ना कोई साथी अगर,
मिल गई है मुझको मधुबन की डगर,
देखो कैसा हो गया प्यार का असर,
बाबा जब से.........................

बाबा का हाथ सदा सिर पर है

● ब्रह्माकुमारी रानी, मुजफ्फरपुर

जब मैं पहली बार (6 वर्ष की आयु में) कमलानगर (देहली) सेवाकेन्द्र पर गई तो सफेद वस्त्रधारी बहनों को देख बहुत आकर्षण हुआ। उन्होंने ग्रामोफोन पर एक गीत सुनाया, 'इस पाप की दुनिया से कहीं दूर ले चल...।' फिर मुझे आत्मा का पाठ पढ़ाया। मेरी यह पहली मुलाकात बहुत सुखद रही। फिर हम एक खिंचाव से, आकर्षण से सुबह-शाम दो बार वहाँ क्लास में जाने लगे। रोज़ सुबह योग करते और मुरली सुनते। जैसे बच्चे माँ के साथ आते हैं, घूम-फिरकर वापस चले जाते हैं, हम ऐसा नहीं करते थे।

बाबा विष्णु रूप दिखाई दिये

पाँच-छह मास बाद ही माउंट आबू आना हुआ। हिस्ट्री हॉल में बाबा-मम्मा सामने संदली पर बैठे थे। यज्ञ वत्स भी थे। हम दो बहनें, एक भाई, मात-पिता के साथ बिल्कुल आगे बैठे थे। जब पहली बार बाबा की गोद में गये, बाबा ने बहुत प्यार किया। बाबा विष्णु रूप दिखाई दिये। बाबा बहुत बड़ी हस्ती दिखाई दिये। मन में भाव जगा, इस बाबा की बनकर रहूँ। बाबा प्रति इतना आकर्षण हुआ कि हम सारा दिन बाबा के साथ-साथ रहे। जहाँ बाबा, वहाँ हम। आँखें बाबा के सिवाय किसी और को देखती नहीं थी। बाबा ने कहा, बच्ची, किसी समय भी बाबा के कमरे में आना, कोई रोकेगा नहीं।

दमा ठीक हो गया

उन दिनों मुझे छोटी-सी उम्र में दमा हो गया था। बाबा ने अपने कमरे में मुझे गद्दी पर सुलाया। मम्मा को कहा, मम्मा, जितनी बार भी आओ-जाओ, इस बच्ची को बहुत प्यार करना। अब जितनी बार भी बाबा-मम्मा वहाँ से निकलते, मुझे बहुत प्यार करते, मैं शाम तक ठीक हो गई। बाबा के सब तरह के रूप देखे। जितनी बार भी बाबा के पास गई, बाबा ने नई सफेद फ्राक सिलाकर दी। उसके बाद रंगीन कपड़ा पहना ही नहीं। स्कूल में भी गये तो सफेद फ्राक पहनकर ही गये। स्कूल टीचर ने एक कार्यक्रम में डांस करने के लिए कहा। मैंने सोचा, पहले मम्मा से पूछूँगी, फिर करूँगी। मम्मा ने छुट्टी दी तो किया। इतनी छोटी उम्र में भी खान-पान में मर्यादित रहे।

बाबा ने वतन में भेजा

हमें किसी भी समय बाबा के कमरे में जाने की अनुमति मिली हुई थी। दिन का समय था। बाबा गद्दी पर बैठे थे। इशारा मिला, अंदर आओ। कमरे का वातावरण शक्तिशाली, साइलेन्स का था। बाबा की संदेशी रोचा बहन (मम्मा की लौकिक माँ) कुर्सी पर बैठी थी। रोचा बहन को बाबा ने कोई संदेश दिया था, वह ध्यान में चली गई थी। बाबा ने मुझे गद्दी पर सामने बिठाया, पूछा, बच्ची, कभी ध्यान में गई हो? मैंने कहा, नहीं बाबा। बाबा ने पूछा, जाओगी, बाबा तुम्हें भेजें? मैंने कहा, हाँ बाबा। फिर बाबा ने कहा, अच्छा बच्ची, आज बाबा तुमको ध्यान में भेजता है। बाबा की दृष्टि जैसे-जैसे मिलती गई, मैं लाइट, एकदम लाइट होती गई। फिर बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा। कुछ समय बाद मैं वतन में पहुँच गई। वतन का दृश्य देखने लगी। वतन में बाबा को देखने लगी। कितनी देर मैं वहाँ रही, मुझे पता नहीं रहा। फिर बाबा ने मुझे नीचे उतारा। नीचे आई तो मेरी आँखें लाल-लाल थी। मुझे ऊपर बहुत आनन्द अनुभव हुआ। बाबा ने कहा, बच्ची, इसी नशे में चलती रहो।

मुझे आज भी महसूस होता है कि बाबा का हाथ सिर पर है। कोई बात आती है तो महसूस होता है कि मैं बाबा के सामने बैठी हूँ, बाबा ज़िम्मेवार है। इसलिए कभी माथा भारी होता नहीं। यह वरदान है।

भाषण लिखना और करना सिखाया

एक बार मधुबन में बाबा मुरली चला रहे थे, मैं बाबा के सामने बैठी थी। मुरली पूरी होने पर बाबा ने मुझसे कहा, आज जो मुरली चलाई, उसे भाषण की तरह लिखकर दस बजे बाबा के कमरे में, बाबा को दिखाना। मुरली रक्षाबंधन पर थी, मैंने मुरली के प्वाइंटस लिखे। रक्षाबंधन पर दो-तीन पेज का भाषण लिखकर दस बजे से पहले बाबा के कमरे में पहुँच गई। बाबा ने कहा, पढ़कर सुनाओ। मैं सुना रही थी तो बाबा सब नोट कर रहे थे। बीच में पूछा, बच्ची, किसी से पूछकर लिखा? मैंने कहा, अपने आप लिखा। बाबा ने कहा, अच्छा लिखा है, बोलने का तरीका भी अच्छा है। फिर बृजशान्ता दादी को कहा, यह भाषण सिंधी में लिखकर दो, बाबा सुबह अमृतवेले पढ़ेगा।

अगले दिन फिर रक्षाबंधन पर मुरली चली। मुरली पूरी होने पर बाबा ने कहा, बच्ची, इस मुरली के प्वाइंट लिखकर 10 बजे बाबा के कमरे में आना। फिर कहा, पढ़कर सुनाओ। मैंने सुनाया तो कहा, दोनों दिनों का इकट्ठा करके सुनाओ। फिर मैंने दोनों दिनों का इकट्ठा करके सुनाया। फिर बाबा ने कहा, आज रात्रि क्लास में भाषण करना, बाबा सुनेगा। मैंने हिस्ट्री हॉल में रात्रि क्लास में भाषण किया। बाबा ने पैसेज में घूमते-घूमते सारा भाषण सुना। भाषण पूरा होने पर बाबा हॉल में आये, मुझे बहुत वरदान दिये।

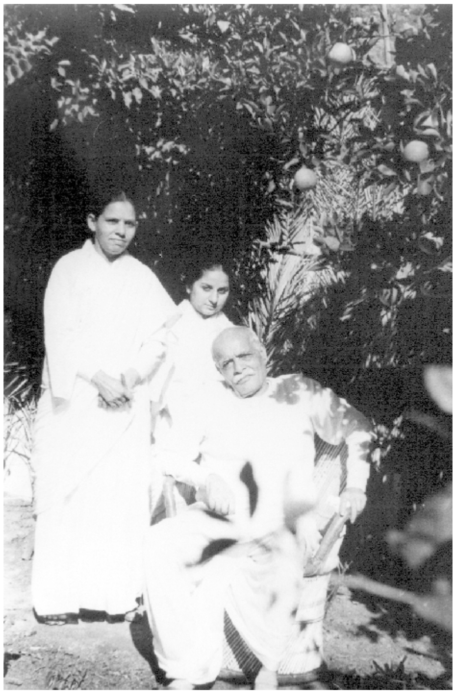

मेरी प्रारंभ से वैराग्य वृत्ति थी

दो दिन बाद बाबा झोंपड़ी के पास बगीचे में चक्कर लगा रहे थे। मैं भी वहाँ चली गई। बाबा ने देखा, दृष्टि दी, गले लगाया और पूछा, बच्ची, बॉम्बे देखी है? बॉम्बे जाओगी? फिर कहा, जाओ बच्ची, बॉम्बे घूमकर आना। बाबा ने दादी बृजशान्ता को पत्र लिखा कि बच्ची को बॉम्बे घुमाना। अगले दिन बृजशान्ता दादी के साथ मुझे बॉम्बे भेज दिया। उस समय उम्र थी 12 वर्ष। बॉम्बे में पत्र लिखा कि बाबा ने बच्ची को भाषण सिखाया है, जहाँ जाए, इससे भाषण करवाना। बृजशान्ता दादी ने सोचा कि इसे घुमायें। मेरी शुरू से वैराग्य वृत्ति थी। कहीं घूमने-फिरने का शौक नहीं था। हम अपनी इच्छा से तो कभी घूमने नहीं गये। दादी कहती, यहाँ जाओ, वहाँ जाओ। दादी भेजती थी, बाबा ने कहा था इसलिए मैं चली जाती थी। रोज़ कहीं न कहीं क्लास कराने, घूमने भेजती।

सेवा में बाबा के साथ की अनुभूति

मुझे बॉम्बे आये 15-20 दिन हो गये थे। बाबा का पत्र आया, लिखा था, बाबा को प्रेरणा आती है कि तुम बॉम्बे में रहकर सेवा करो। दादी बृजशांता ने कहा, इस पत्र को फ्रेम में लगा देना, अब तुम्हें यहीं रहना है। दादी ने मेरा पास बनवा दिया और मैं रोज मालाड क्लास कराने जाने लगी। बाबा को कहती थी, आप मेरे साथ चलो। मैं अनुभव करती, बाबा मेरे

साथ हैं। बाबा मेरे साथ सीढ़ी उतर रहे हैं। एक घंटे का ट्रेन का रास्ता था। पूरा समय लगता था कि बाबा मेरे बाजू में बैठे हैं। बाबा से बातें करती। जब क्लास कराकर वापस आती तो बहन कहती, तुम्हारी आँखें ऐसी लगती हैं जैसे बहुत योग करके आई हो। बाबा के पत्र आते थे। बाबा सिन्धी में लिखते थे। पंद्रह-बीस पेज का पत्र होता था। उसे पढ़ने के लिए मैंने सिन्धी सीखी। दादी कहती, पत्र पढ़कर सबको सुनाओ, मैं बाबा का सिन्धी पत्र पढ़कर सुनाती थी।

बड़ी शक्ति है प्रभु पालना में

मुंबई के वायुमण्डल से मेरी सेहत बिगड़ने लगी। मुझे दमा हो गया। डॉक्टर ने कहा, यह यहाँ समुद्र किनारे ठीक नहीं रहेगी। बाबा मुंबई आये। मैं सामने ही बैठी थी। बाबा ने पूछा, तबीयत ठीक है? तबीयत ठीक नहीं थी। शिवरात्रि आने वाली थी। बाबा ने वहीं से चंद्रमणि दादी के साथ मुझे अमृतसर भेज दिया। कुछ समय बाद बाबा ने बुलाया और कहा, बच्ची, बाबा तुमको ईस्टर्न में भेजता है, वहाँ तुम्हारा दमा ठीक हो जायेगा। मैं ईस्टर्न में गई और सचमुच मेरा दमा ठीक हो गया। प्रभु पालना में बहुत बड़ी शक्ति है। **बाबा की ऐसी मीठी पालना मिली जिसने दुनिया के सब आकर्षण भुला दिये। जिसे साकार बाबा से बहुत प्यार है, वह किसी देहधारी के नाम-रूप में फँस ही नहीं सकता।**

एक बार मुंबई में मैं दादी के पास थी। दादी के सिर में दर्द हो रहा था, मैं बाम लगा रही थी। दादी ने कहा, रानी देखो, मेरे सामने बाबा खड़ा है। मैंने पूछा, दादी, कौन-सा बाबा? दादी को अच्छा नहीं लगा, कहा, एक ही तो बाबा है, एक में ही तो दो हैं। मैं सोचने लगी कि बाबा हर समय दादी के सामने रहता है तो मैं भी तो ऐसा कर सकती हूँ। मैं भी साकार में निराकार को देख सकती हूँ। मैं भी ऐसा ही करने लगी।

एक बार बाबा दीदी से बात कर रहे थे। दीदी को कहा, एक सेन्टर से समाचार आया है, दो पार्टी बन गई हैं, बाबा इस बच्ची को वहाँ भेजेंगे, यह जायेगी तो दोनों ग्रुप एक हो जायेंगे। बाबा ने मुझसे पूछा, बच्ची, तुम वहाँ जाओगी, बाबा तुम्हारे साथ सहयोगी बहन भी भेजेगा, वह भोजन बनायेगी, कपड़े धुलाई करेगी, तुम सिर्फ क्लास कराना, उनको एक कर देना। दीदी ने कहा, बाबा, यह छोटी बच्ची है, इसे किसी झमेले में क्यों डालते हो? मैं वहाँ गई नहीं पर यह बात मुझे भूलती नहीं है कि बाबा ने कहा था, यह जायेगी तो सब ठीक कर देगी।

बाबा ने पूछा, रूठ गई हो?

एक बार पांडव भवन में अव्यक्त बापदादा आये हुए थे। मुरली चल रही थी। घोषणा हुई कि आज कोई स्टेज पर नहीं आयेगा। मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने बाबा को कहा कि सारे रिश्ते तो आपसे जोड़े, अब आपसे मिल भी नहीं सकते। हर बार बाबा जब तक रहते, मैं वहीं बैठी रहती थी। पर उस दिन मैं उठकर चली गई। जाकर सोने की कोशिश की पर नींद नहीं आई। बार-बार खींच होती रही। दो बजे स्नान करके वापस गई, हॉल में सबसे पीछे जाकर बैठ गई। तभी मोहिनी बहन ने एनाउन्स किया कि रानी बहन, बाबा आपको बुला रहे हैं। कभी भी मुझे रोना नहीं आता पर उस दिन जब बाबा के सामने गई तो आँखों में स्नेह के मोती भर आये। बाबा ने पूछा, अच्छा, रूठ गई हो? बाबा से रूठ गई हो? बाबा टोली निकालकर देते गये। मेरे दोनों हाथ टोली से भर गये। फिर बाबा ने कहा, बच्ची, तुमको तो बाबा ने वतन में आकर मिलना सिखाया है, वतन में तो क्यू (लंबी लाइन) भी नहीं है। तुम वतन में आकर बाबा से मिला करो। बाबा हमेशा तुम्हारे साथ है।

मैं बाबा से मिलकर आई तो मैंने संकल्प किया कि आज के बाद मैं कभी नाराज़ नहीं होंगी। मैं बाबा से वतन में बातें करूँगी। कोई भी बात आती है तो मैं बाबा से एक-एक घंटा बातें करती हूँ, इससे मेरी हर बात का समाधान हो जाता है। ❖

वो प्यार भरा हाथ, वो प्यार भरे बोल

● ब्रह्माकुमारी वनिता, जैतपुर

बात सन् 1964 की है, तब मेरी उम्र करीब चौदह-पंद्रह साल थी और दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी। पिताजी मेरे जन्म से पहले ही इस दुनिया से चल बसे थे। सिर्फ माँ की छत्रछाया में अपना जीवन बिता रही थी। इसे मेरा परम सौभाग्य कहिये कि इस किशोरावस्था में ही मुझे पारलौकिक पिता शिवबाबा और अलौकिक पिता ब्रह्मा बाबा की छत्रछाया प्राप्त हो गई।

माँ के विरोध से मैं घबराई नहीं

लौकिक मौसी द्वारा मुझे यह ईश्वरीय संदेश प्राप्त हुआ कि स्वयं ईश्वर पिता साकार में, आत्मा रूपी बच्चों से मिलने इस दुनिया में आ चुके हैं। मैंने और मेरी छोटी मौसी (दमयन्ती बहन, जूनागढ़) ने साथ-साथ मुंबई के सायन सेवाकेन्द्र पर सात दिवसीय कोर्स किया। कुछ मास तक तो हम गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ की मस्ती में झूमते रहे। घर में नानी माँ और दोनों मौसियों की तरफ से मुझे पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा था। लेकिन कहा जाता है, बिगर समस्या, तपस्या की लगन तीव्र नहीं हो सकती, अतः मेरे सामने भी परिस्थिति आ गई। मेरी लौकिक माताजी, जो कोलकाता गई हुई थीं, वापिस आई। उनके मन में ओम मंडली के प्रति कुछ भ्रांतियाँ थीं। आते ही उन्होंने कड़े शब्दों में कह दिया कि कुछ भी हो, क्या भी हो, मैं आपको वहाँ जाने ही नहीं दूँगी। फिर भी मैं बिल्कुल घबराई नहीं। मुझे जो गुप्त ईश्वरीय खज़ाना और उमंग-उत्साह के पंख मिले थे, उनके कारण मेरी हिम्मत बनी रही। बाबा और ड्रामा पर अटल निश्चय होने के कारण अकल्याण में भी कल्याण दिखाई पड़ रहा था।

माताजी का सेवाकेन्द्र पर आगमन

मेरी माताजी को एक ऐसी बीमारी थी जिस कारण साल में दो-तीन बार वे बेहोश हो जाती थी। मैं रस्म अनुसार मन में संकल्प करती थी कि पिताजी के प्रति ब्राह्मणों को भोजन करवायेंगे और इसके बाद पानी की अंचली डालते ही मेरी माँ तुरंत जागृत हो जाती थी। इस बार जब वे बेहोश हुई तो मैंने अंदर संकल्प किया कि इस बार पिताजी के नाम का भोग, सतगुरुवार के दिन ईश्वरीय सेवाकेन्द्र पर, प्यारे बापदादा को स्वीकार कराके, पवित्र ब्रह्मावत्सों को खिलायेंगे ताकि माताजी का भी कल्याण हो जाये। यह संकल्प करते ही वे ठीक हो गई। मैंने माँ को अपना संकल्प सुनाया। पहले तो वे बाबा के घर जाने के लिए सहमत नहीं हो रही थी क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं मुझे भी जादू न लग जाये। बाद में बहुत समझाने पर वे तैयार हो गई। उन्होंने एक शर्त रखी कि मैं जाऊँगी तो सही लेकिन न तो भोग खाऊँगी और न ही दृष्टि लूँगी। वे बाबा के घर आई और ज्ञान के क्लास में बैठ गई।

वतन में पिताजी से मुलाकात

दादी बृजेन्द्रा ने भोग लगाने के समय संदेशी बहन के बाजू में मुझे भी बैठा दिया और आश्चर्य की बात यह रही कि बाबा ने संदेशी के साथ-साथ मुझे भी वतन में बुला लिया अर्थात् मेरी भी रस्सी खींच ली। मैं पहली बार वतन में पहुँची। जादूगर बाबा ने वतन में आश्चर्यानन्द से भरने वाला दृश्य दिखाया कि एक तरफ ब्रह्मा बाबा और दूसरी तरफ वतन में लौकिक पिताजी को भी प्रकट कर दिया। मेरे लौकिक पिताजी के मुख से कुछ वाक्य निकले कि बच्ची, तुम इसी राह पर चलती रहना, मैं बहुत खुश हूँ। पहले तो मैं अपने पिताजी को पहचान

नहीं सकी क्योंकि कभी उनको देखा ही नहीं था। जब ब्रह्मा बाबा बोले, बच्ची, अपने पिताजी से नहीं मिलोगी तो मैं पिताजी की ओर देखने लगी। पिताजी फिर बोले, बच्ची, इस राह पर निर्भय होकर चलती रहना, यह मार्ग ज़रूर-ज़रूर अपनाकर रखना, तुझे मेरी गुप्त मदद मिलती रहेगी। फिर वह दृश्य लुप्त हो गया। ब्रह्मा बाप बोले, बच्ची, अपने पिताजी का कहना तो मानोगी ना! मैं तो यह विचित्र दृश्य देख कुछ बोल ही नहीं पाई, सिर्फ इशारे से ही हाँ जी कह दिया। जब यह संदेश मैंने नीचे साकार लोक में आकर सुनाया तो मेरी लौकिक माताजी भी कहने लगी कि मुझे भी ऐसी भासना आ रही थी कि मेरी बच्ची कुछ कह रही है और बच्ची अपने पिताजी को भोग खिला रही है। इस अलौकिक घटना ने मेरी माँ के हृदय को परिवर्तन कर दिया। उनका व्यवहार शीतला देवी जैसा हो गया। उस दिन से वे भी निश्चयबुद्धि बन ज्ञान में चल पड़ी। इसके बाद मुझे भी ज्ञान में चलने या समर्पित होने में कोई रुकावट नहीं आई।

नाजुक उंगलियों पर मक्खन

इसके बाद मुझे मधुबन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी मम्मा के साथ बाबा के कमरे में पिकनिक रखी गई थी। उन दिनों मधुबन में सेवाधारी नहीं रहते थे। जो पार्टी बाबा से मिलने आई होती थी वही भोजन, नाश्ता आदि बनाने में मदद करती थी। उम्र छोटी होने के कारण और लौकिक घर में सदस्य बहुत होने के कारण मेरे ऊपर कभी भोजन बनाने की ज़िम्मेवारी नहीं आई थी। भण्डारे की मीठी भोली दादी ने प्यार और पुचकार देकर मुझे मीठे शब्दों में कहा, बालकी, तुम भोलेनाथ के भंडारे में आई हो, कुछ तो करोगी न, लो, यह अदरक और मिर्ची पीस दो तो आलू बड़े अच्छे बनेंगे। लज्जा के मारे मैं ना नहीं कह सकी। उस समय मशीन आदि कुछ नहीं थी। पीसते-पीसते मेरे हाथ जलने लगे और कांपने भी लगे। शाम को साढ़े चार बजे साकार बाबा-मम्मा के सामने हम 21 सदस्यों की पिकनिक थी। साकार बाबा की विशाल दृष्टि, विशाल बुद्धि की कमाल देखिये जो इतनी सभा के बीच बाबा की दृष्टि मेरे हाथों पर पड़ गई। बाबा ने तुरंत कहा, बच्ची, इधर आओ, बच्ची, तुम्हारे हाथ क्यों काँप रहे हैं? मैंने मासूमियत से कह दिया, बाबा, मिर्च पीसने के कारण हाथ जल रहे हैं। बाबा ने तुरंत लच्छू बच्ची को कहा कि भोली बच्ची को बुलाओ। मैं तो डर गई कि बाबा भोली दादी को कुछ कहेंगे तो नहीं परंतु बाबा तो सबके प्रति दया के सागर हैं। बाबा तो हर कर्म में कुछ न कुछ पाठ पढ़ाते हैं। बाबा ने भोली दादी को देखा तो कहा, बच्ची, भंडारे से मक्खन ले आओ, इस बच्ची को लगा देंगे। मक्खन आया और बाबा ने स्वयं अपने ही हाथों से मेरी नाजुक उंगलियों पर इतने प्यार से लगाया जो मैं उसी प्यार में समा गई। अपनी सुध-बुध भूल गई। दर्द कहाँ गया पता ही नहीं पड़ा। वह प्यारा और निराला दृश्य आज भी जब याद आता है तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। दिल यही गीत गाने लगता है कि इतना प्यार करेगा कौन!

उस दिन से जैसे मुझे वरदान प्राप्त हो गया एक तो तन की तंदुरुस्ती का और दूसरा, किसी भी प्रकार का ब्रह्मा भोजन व नई चीज़ मैं आसानी से बना सकती हूँ। बाबा के घर में चाहे कोई आधी रात को भी मेहमान बनकर आये, मुझे खिलाने में कभी भी आलस्य या थकावट महसूस नहीं होती, और ही उमंग-उत्साह बना रहता है। सचमुच यह वरदान भाग्य बनाने में बहुत-बहुत सहयोगी है। बाबा आज वतन में बैठे भी बच्चों की देखभाल कर रहे हैं। बाबा कभी भी अपने बच्चों को भूल नहीं सकते।

बाबा के बोलों का बल आज भी साथ

एक बार बाबा के डायरेक्शन प्रमाण कोलाबा सेन्टर की पुष्पशांता दादी को कुछ सामान मधुबन भेजना था। कम से कम 8-10 पार्सल थे। दादी ने पूछा, तुम्हारे में इतनी हिम्मत है

जो इतना सामान लेकर अकेली जा सको? मैंने मधुबन जाने की लगन में हाँ कह दिया और उसी लगन में झूमते-झूमते हिम्मत से, अहमदाबाद ट्रेन बदली कर मधुबन पहुँच गई। उस समय मेरी उम्र 18 साल की थी। भूरी दादी मुझे लेने आई थी। दादी के साथ मैं साकार बाबा के सामने पहुँची, बाबा मुझे देखते ही कहने लगे, शाबाश बच्ची। बाबा के इन प्यार भरे बोलों की स्मृति आज भी मुझे बलवान बना देती है। मेरी हिम्मत कभी भी टूटती नहीं है। कैसा भी कार्य हो, निर्भय होकर कर सकती हूँ। कितनी भी भागदौड़ वाली सेवा हो, मैं थकती नहीं हूँ। कैसा भी पेपर आये, चाहे शरीर की बीमारी का, चाहे असंभव कार्य का, मैं घबराती नहीं हूँ। बाबा का वो प्यार भरा हाथ और वो प्यारे बोल आज भी मुझे सकाश देकर वतन की ओर उड़ा रहे हैं। मन उन्हीं ख्यालों में गाने लगता है, तेरे ख्यालों में हम, तेरी ही बाँहों में हम...। वर्तमान समय करीब परिवार के 38 सदस्य ईश्वरीय ज्ञान में हैं जिनमें से मैं और दमयन्ती बहन समर्पित हैं। ❖

क्रोध के शमन की ओर

किसी के भी ठीक ढंग से कार्य न करने पर क्रोधित स्वभाव के कारण मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता है। हर एक पर तो गुस्सा कर नहीं पाता क्योंकि ज्ञान है, वह वापस लताड़ेगा परंतु अपनी पत्नी की छोटी-सी भूल पर, पारा सातवें आसमान पर चढ़ता है और मैं उस पर वैसे ही झपटता हूँ जैसे शेर बकरी पर..। गनीमत है कि मेरे स्वभाव से वाकिफ होने के कारण वह शांत रहती है। ताने सुनाकर, बकझक कर, कुछ देर भनभना कर थक जाता हूँ। यह महसूस भी करता हूँ कि जीवन के इस पड़ाव पर स्वास्थ्य के लिए ऐसा व्यवहार कदापि उचित नहीं है। नवंबर, 2011 में शांतिवन में आदरणीय वरिष्ठ राजयोगी निर्वैर भाई जी से आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मिला। उन्होंने आत्मीयता से समझाते हुए पूछा, अवगुण के अलावा धर्मपत्नी में कोई गुण भी देखा है क्या? मेरे बताने पर कि उनमें गुण ज्यादा हैं, गृहस्थी शांत रह बखूबी संभालती है, उन्होंने पुनः प्रश्न किया, आपमें तो कोई अवगुण नहीं होगा? मैंने स्पष्ट किया कि मेरे में अवगुण ज्यादा व गुण कम हैं। उन्होंने फिर समझाया कि आपके किसी अवगुण पर कोई टीका-टिप्पणी करे, आपको कैसा महसूस होगा? अवश्य ही बहुत बुरा लगेगा और मन में विचार आयेगा कि मेरे गुणों पर ध्यान न देते हुए ये सिर्फ अवगुणों की ही चर्चा कर, क्यों कचोटते रहते हैं? उन्होंने प्रेमपूर्वक समझाया कि हर एक में गुण-अवगुण दोनों होते ही हैं। अपने को अवगुणों पर ध्यान न देते हुए एक-दूसरे के गुण देखने हैं तभी जीवन में सामंजस्य बना रहता है।

क्रोध से मुक्त होने का दूसरा तरीका – ईश्वर पिता के समक्ष सारे विकारों-दुर्गुणों का दान एवं दान में दी गई वस्तु कभी वापिस नहीं ली जाती। अतः जब इस बुराई का दान कर दिया, फिर अब गुस्सा आने का प्रश्न कहाँ? हाँ, पुराने संस्कार-स्वभाव बदलने में समय लगता ही है।

करीब दो माह बाद वरिष्ठ ब्रह्माकुमारी शीलू बहन जी के कोलकाता आगमन पर उनसे पूछ बैठा कि शांत अवस्था में ज्ञान याद रहता है लेकिन परिस्थिति उलझते ही मैं ज्वालामुखी-सा अभी भी फूट पड़ता हूँ, कृपया बताइये कि उस क्षण एक सेकंड में अपने आप को कैसे काबू करूँ? उन्होंने बड़े ही सहज भाव से समझाया कि उस पल ओमशांति का उच्चारण करो। ओमशांति में इतनी शक्ति है जैसे उफनते दूध में पानी डालते ही दूध शांत हो जाता है।

बाबा की असीम कृपा है कि वरिष्ठ भाई-बहनों के सानिध्य व अनुभवों द्वारा स्व-परिवर्तन से हमारे जीवन की बगिया सुंदर व सुगंधित होने की ओर अग्रसर है।

– शिव प्रकाश मोदी, कोलकाता

सबको अपनेपन का अहसास कराते थे ब्रह्मा बाबा

● **ब्रह्माकुमार अमीरचन्द, चंडीगढ़**

ब्रह्माकुमार अमीर चन्द भाई यज्ञ के अनन्य रत्न हैं। सन् 1958 में मात्र 19 वर्ष की आयु में आप ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आए। वर्तमान में चण्डीगढ़ में रहते हुए आप पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड व जम्मू कश्मीर में स्थित ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों के निदेशक हैं। राजयोगा एज्यूकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के समाज सेवा प्रभाग के आप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। आध्यात्मिक जीवन व ज्ञान के अनेक रहस्यों पर प्रोफेसर ओंकारचन्द ने आप से विस्तारपूर्वक चर्चा की। प्रस्तुत हैं वार्तालाप के मुख्य अंश – सम्पादक

प्रश्नः-आपको युवावस्था में ही ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ने की प्रेरणा कहां से मिली, यहां किस चीज़ से आप प्रभावित हुए और जुड़ने के बाद आप में क्या विशेष परिवर्तन आया?

उत्तरः- लौकिक परिवार में उस दौरान एक घटना घटी। सन् 1958 के शुरू में लौकिक पिता जी, जो कुछ समय से बीमार थे, ने शरीर छोड़ दिया। मैं घर में सबसे बड़ा लड़का था इसलिए उनकी मृत्यु के बाद मैंने संकल्प लिया था कि अपने छोटे भाई-बहनों को पढ़ाने व सम्भालने के लिए मैं शादी नहीं करूँगा।

उसी दौरान किसी ने मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था का परिचय दिया तो मैं करनाल में उनके सेवाकेन्द्र पर जाने लगा। मुझे वहां का वायुमण्डल व ज्ञान बहुत अच्छा लगा। वहां जाकर मुझे प्रेरणा आई कि विवाह न करने का जो संकल्प मैंने लिया है उसे सही ढंग से निभाने के लिए मन की पवित्रता भी महत्त्वपूर्ण है। यहां से जुड़ने से मुझे अपने मन को शुद्ध रखने में बहुत मदद मिलने लगी, इसलिए मेरा झुकाव अधिक होता गया। कर्म की शुद्धता की बात कि झूठ मत बोलो, हेराफेरी, धोखा न करो, गलत कामों से बचो इत्यादि-इत्यादि तो हम दुनिया में भी सुनते थे लेकिन जब मानसिक शुद्धता की बात यहां सुनी तो वह दिल को भा गई।

इस विद्यालय से जुड़ने के बाद मैंने यह बात सीखी कि हम किसी के प्रति बुरी भावना भी न रखें। मैंने यहां राजयोग का अभ्यास किया जिससे मेरा मन ईश्वर से जुड़ने लगा, इससे अपने संकल्प में अडिग रहने की दृढ़ता आई। कुछ समय बाद मन में विचार आया कि लौकिक भाई-बहनों को पाँव पर खड़ा करने के बाद मुझे क्या करना चाहिए। फिर फैसला लिया कि समाज में पाप, भ्रष्टाचार, दुख व अशान्ति से जो कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं, लोगों को उनसे छुड़ाने के लिए मैं शेष जीवन लगाऊँगा। इसलिए 30 नवम्बर, 1982 को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर पूर्णतः समाज को श्रेष्ठ बनाने के कार्य में लग गया ताकि दुनिया से पाप, अधर्म व अज्ञानता समाप्त हो सके।

प्रश्नः-ब्रह्मा बाबा के जीवन का कोई अविस्मरणीय संस्मरण बताएं? चण्डीगढ़ की सेवाओं प्रति बाबा का क्या संकल्प था?

उत्तरः- बाबा के अनेक संस्मरण मेरे स्मृति-पटल पर हैं। मुझे याद है, फरवरी, 1968 में मेरा ट्रांसफर होकर चण्डीगढ़ आना हुआ। मई, 1968 में मैं मधुबन गया। बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया और चण्डीगढ़ का समाचार पूछने लगे। वहाँ की वास्तविक स्थिति मैंने बाबा के आगे स्पष्ट कर दी।

बाबा ने मुझे दृष्टि दी और कहा कि बच्चे, चण्डीगढ़

राजधानी है, जो नया-नया विकसित हो रहा है। बाबा जानता है कि किसी समय यह एक विशेष स्थान बनेगा। इसलिए बच्चे वहां पर एक अच्छा आध्यात्मिक म्यूज़ियम होना चाहिए। इसके लिए आप कोई अच्छा स्थान देखो, वहां म्यूज़ियम बनाएँगे। बाबा को मालूम है कि वहां बहुत पढ़े-लिखे व बुद्धिजीवी लोग रहने लगे हैं। इस म्यूज़ियम से उन्हें ईश्वरीय सन्देश मिलेगा। जैसे-जैसे बाबा कह रहे थे, मैं बाबा को देख रहा था और जाने-अनजाने मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। बाबा उस वक्त लेटे हुए थे। बाबा ने उठकर मुझे गले से लगाया और पूछा कि क्या बात है। मैंने कहा, बाबा सच्चाई यह है कि जो सेवाकेन्द्र वहां किराये पर लिया है, अभी उसका किराया देना भी हमारे लिए मुश्किल हो जाता है क्योंकि नियमित रूप से वहां पर थोड़े भाई-बहनें ही क्लास में आ रहे हैं। मुझे यह संकल्प आ रहा है कि जो कार्य आपने दिया वह कैसे सम्पन्न होगा।

बाबा ने मुझे गले लगाया, प्यार किया व दृष्टि देते हुए कहा कि बच्चे, यह आज्ञा कौन दे रहा है, कौन तुम्हें यह काम करने के लिए कह रहा है। बाबा ने दो-तीन बार यह बात दोहराई। फिर कहा कि बाबा ने जो कहा है वह करो, किराये पर मकान लो, बाबा सब प्रबन्ध करेंगे। तुम चिन्ता मत करो, सब काम आपे ही हो जाएगा। बाबा के ये शब्द हमारे लिए वरदान बन गए। मैं वापिस चण्डीगढ़ आया और बाबा की आज्ञानुसार एक मकान किराये पर लिया और बाबा को सूचित किया। बाबा ने कुछ समय बाद पत्र लिखा कि मैं आपके पास बटाला से अचल बच्ची को भेज रहा हूँ। मैंने दादी चन्द्रमणि को भी लिखा है, वह भी ध्यान रखेगी। नंगल में बृजमोहन भाई व मोहिनी बहन को भी पत्र लिख रहा हूँ वह भी आपको सहयोग देंगे। बाबा सब काम करवा देंगे।

सचमुच थोड़े समय बाद ही वहाँ सुन्दर म्यूज़ियम बनकर तैयार हो गया जिससे अनेक लोगों को ईश्वरीय सन्देश मिला। चण्डीगढ़ की सेवाओं प्रति बाबा ने जो वरदान दिए वे सचमुच आज प्रत्यक्ष होते दिखाई दे रहे हैं। शहर के बीचों-बीच लगभग एक एकड़ ज़मीन में दो बड़े-बड़े भवन बाबा की सेवा के लिए बने हैं। शहर व इसके आसपास लगभग 15 सेवाकेन्द्र बाबा के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

प्रश्नः-बाबा के व्यक्तित्व में किस बात से आप अधिक प्रभावित हुए?

उत्तरः- जब मैं बाबा के सम्बन्ध में आया तो मुझे बहुत ही अपनेपन की महसूसता हुई। ऐसा लगा यही मेरे सच्चे अलौकिक पिता हैं। जब मैं पहली बार बाबा से मिला तो 4-5 महीने का बाबा का बच्चा था और लौकिक दृष्टिकोण से भी कोई बड़ा व्यक्ति नहीं था। मैं मधुबन में बाहर आँगन में खड़ा था। बाबा वहाँ से गुज़र रहे थे। उन्होंने इशारे से मुझे बुलाया और मेरा हाथ पकड़ कर कहा कि आओ बच्चे, बाबा आपको सारा घर दिखाते हैं। उन दिनों वहां एक छोटा-सा मकान था जैसे किसी परिवार का सामान्य घर होता है।

बाबा मुझे एक-एक कमरे में ले जाने लगे और बताने लगे कि देखा, यहां पर बाबा का कमरा है, यहां पर मम्मा का कमरा है, यहां पर स्टोर है जहां सारा सामान रखा हुआ है। तब मुझे संकल्प उठा कि बाबा मुझे ये सारी चीजें क्यों बता रहे हैं, मैंने यहाँ रहकर कोई इनकी सम्भाल तो करनी नहीं है। बाद में महसूस हुआ कि बाबा मुझे यह एहसास कराना चाहते थे कि यह घर आपका अपना ही है। मुझे बाबा अपनेपन की भासना दे रहे थे। यह अनुभूति केवल मुझे ही नहीं हुई थी बल्कि उनसे मिलने वाले हर व्यक्ति को होती थी। सबको लगता था कि बाबा मुझको विशेष समझता है, मुझे ज्यादा प्यार करता है। बाबा का प्यार सहज ही पुरानी दुनिया को भुलाने में मदद करता था। ऐसा लगता था कि अब यह जीवन हमें बाबा के लिए ही लगानी है।

प्रश्नः- बाबा ने किस पुरुषार्थ से महानता को प्राप्त

किया?

उत्तर:- शिव बाबा की जो शिक्षाएं थीं, व्यक्तिगत जीवन में ब्रह्माबाबा शत प्रतिशत, अक्षर बाई अक्षर उनका स्वरूप नज़र आते थे। बाबा के मन में सदा ही रहता था कि यह कार्य भगवान का है, मैं तो इसमें निमित्त मात्र हूँ। बाबा एकान्त में शिवबाबा की निरन्तर याद में रहते थे। बहुत कम नींद करते थे। जीवन उनका अति साधारण था लेकिन स्थिति को अव्यक्त बनाने के लिए उन्होंने बहुत पुरुषार्थ किया। जो भी सम्बन्ध सम्पर्क में आया उसे बाबा ने ईश्वरीय कार्य में लगने की प्रेरणा देकर आगे बढ़ाया। हरेक की विशेषता को ही बाबा ने देखा और उसे ईश्वरीय कार्य में लगाया।

प्रश्न:- अगर किसी को भगवान का प्यार पाना हो और उसका दिल जीतना हो तो उसे क्या करना चाहिए?

उत्तर:- वैसे तो भगवान प्यार का सागर है, वह सभी से प्यार करता है लेकिन उसके प्यार का विशेष पात्र बनने के लिए कुछ विशेषताएँ व गुण अपने अन्दर पैदा करने होंगे। जो गुण व शक्तियाँ ईश्वर में है वे अगर हम अपने जीवन में धारण करते हैं तो उसके समीप आ सकते हैं। व्यक्ति भी उसी से प्यार करता है जो उसके लिए कुछ करता हो। एक बाप के अगर दो बच्चे हैं तो वह प्यार तो दोनों से ही करता है पर जो बच्चा पिता के गुणों को अपने में लाकर उसके कारोबार को देखता है और पिता की आशाओं को पूरा करता है तो स्वत: ही बाप का उसके प्रति अधिक प्यार पैदा होता है। यही बात ईश्वर पिता पर भी है। सभी उसकी सन्तान हैं। जो उसके नियम-कायदे अनुसार अपना जीवन चलाता है, वह उसका दिल जीत लेता है। जो अपना जीवन दूसरों के लिए जीवन्त उदाहरण बनाता है, दया भाव, रहम भाव, सहानुभूति, भाईचारा, त्याग, सहयोग देने की भावना जीवन में लाता है वह ईश्वर को बहुत अच्छा लगता है। ❖

स्मृति पुष्प

ब्रह्माकुमार विपिन, वाराणसी

दिल को देती है आहट, है दिल की यही चाहत।
यादें तुम्हारी बाबा, देती हैं दिल को राहत।।

साकार के वो किस्से, बन गए दिल के हिस्से,
भूलें ना ख्वाबों में हम, पाया है सब कुछ जिससे।

यादों में जब समाऊँ, नयनों से मोती छलके,
बाबा वो प्यार तेरा, सूरत से सदा ही झलके।।

पालना वो बाप की दी, माता की दी ममता,
वाह ये धन्य जीवन, खुशी में हर पल रमता।

साकार पालना से, आकारीपन सिखाया,
बनके फरिश्ता बाबा, लक्ष्य हमें दिखाया।।

हमें ये गम नहीं कि साकार में ना मिले,
एक तू ही तो है माली, गुलशन में हम खिले।

बनके दलाल अब भी, शिव से देखा मिलाते,
पालना वो अंग-संग की, आदि रत्नों से दिलाते।।

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

समर्पणता से संपन्न, संपूर्ण ब्रह्मा बाबा

● **ब्रह्माकुमार शिवकुमार, बी.के.कालोनी, शान्तिवन**

जनवरी मास आते ही प्यारे ब्रह्मा बाबा की यादें स्वत: ही तरोताज़ा हो जाती हैं। उनका त्याग, तपस्या, सेवा का जीवन, दिलों में प्रभु प्रेम भर देता है। मधुबन घर में उनके किये हर चरित्र, जीवन कहानी के रूप में सामने आते हैं। उनकी वो विदेही अवस्था बरबस दिल को छू लेती है। कैसे उन्होंने योगबल से प्रकृति तथा पाँच विकारों पर विजय प्राप्त कर संपन्न और संपूर्ण अवस्था को प्राप्त किया, जबकि इतने बड़े ब्राह्मण परिवार की ज़िम्मेवारी थी, फिर भी वो न्यारे, प्यारे बन शिवबाबा की निरंतर याद से अव्यक्त फरिश्ता, सूक्ष्मवतनवासी बन गये। ऐसे प्यारे साकार ब्रह्मा बाबा का था अद्भुत समर्पण, जो वे सहज ही 33 वर्ष की तपस्या से संपूर्ण बन गये। उनकी सोलह प्रकार की समर्पणता जो हमने मुरली, अव्यक्त पालना व दादियों से अनुभव की, निम्न प्रकार है –

1. दृष्टि की समर्पणता:- प्यारे बाबा को शिवबाबा ने अपना रथ बनाया, आत्म-अनुभूति कराई, उसके बाद बाबा के जीवन में अनोखा परिवर्तन आया, उन्होंने मानव मात्र को, सभी ब्राह्मण परिवार को सदा ही देह से न्यारी आत्मा रूप में देखा। शरीरों के रंग, रूप, आकर्षण से वो मुक्त हो गये जिससे उनकी दृष्टि शीतल, स्नेही, रूहानियत से संपन्न बन गई। उनमें नर, नारी का ज़रा भी भान न रहा।

2. वाणी में समर्पण भाव:- बाबा ने सदा वाणी से सबको सम्मान दिया, सबको ऊँचे स्वमान से जीने की कला सिखाई। वो सदा कम शब्दों में, स्नेह से, शुभ भावनाओं से, हर आत्मा को गुणों से संपन्न बनाने के लिए शिक्षायें देते। उन्होंने अपनी वाणी से मानव मात्र को सुख देकर, वाक् सिद्धि प्राप्त की। उनके हर बोल, मीठी मुरली की शिक्षायें, आज भी हर आत्मा का दिल छू लेती हैं। बाबा अपने हर शब्द आत्माओं के आदि, मध्य, अंत को देखकर बोलते। उनके बोल सदा संयमित होते, उनका हर बोल वरदानी था, भाग्य-विधाता के बोल थे। हरेक बोल ज्ञान के हीरे-मोती थे।

3. संकल्पों में समर्पणता:- बाबा का हर संकल्प परमात्मा शिव की श्रीमत प्रमाण था। उन्होंने अपने संकल्पों का प्रयोग दूर बैठी दुखी, अशांत, कमज़ोर आत्माओं को बल देने में भी किया। जब भी देखो, वे अंतर्मुखी बन, संकल्प-शक्ति से परमात्मा शिव की याद में खोये होते। यूँ कहें कि उनका हर संकल्प 'मनमनाभव' का स्वरूप था। हर संकल्प परमात्मा के रचे इस अविनाशी यज्ञ की सेवार्थ, ब्रह्मावत्सों को माया से मुक्त बनाकर संपन्न बनाने अर्थ, मानव जाति के कल्याण अर्थ था। उन्होंने कई संकल्प भविष्य द्रष्टा बन आत्माओं के भाग्य बनाने अर्थ किये जिन्हें आज भी ब्रह्मावत्स पूरे कर रहे हैं और सतयुगी दुनिया को समीप ला रहे हैं।

4. बुद्धि का समर्पण:- सचमुच ब्रह्मा बाबा ने सब कुछ करके भी अपने को, फालो फादर कर शिव परमात्मा की तरह छिपाया। माताओं, बहनों का नाम बाला किया। जब बाबा को बच्चे कहते, बाबा, आज आपने बहुत अच्छी मुरली चलाई तो वे सहज भाव से शिवबाबा की तरफ इशारा करते कि यह वाणी शिवबाबा की है, शिवबाबा ने सुनाई है, शिवबाबा ज्ञान का सागर है। शिवबाबा इस रथ के द्वारा अपना कार्य करा रहे हैं। उन्हें अपनी बुद्धि का ज़रा भी अभिमान नहीं था कि मैंने कुछ किया है। वे तो सदा ही निरहंकारी, सच्चे सेवाधारी बनकर रहे।

5. पुराने संस्कारों का समर्पण:- कलियुगी दुनिया में जबकि हर मानव में पाँच विकारों के संस्कार हैं, माया की परछाया है, बाबा ने अपने सब पुराने संस्कार, शिव समर्पण कर दिये, स्वाहा कर दिये। उनमें पुराने संस्कारों का लेशमात्र भी नहीं था। उनके श्रेष्ठ संस्कारों के कारण, उनके हर बोल को, हर आत्मा सत्य समझ स्वीकार

करती, उनके जीवन में ईर्ष्या, झूठ, आलस्य, अलबेलापन, उदासी, परेशानी, माँगने के संस्कार ज़रा भी नहीं थे। उन्होंने तो अपने हर संस्कार, भविष्य देवस्वरूप के यहीं पर बना लिये थे। शिवबाबा की हर बात को फालो कर, संपूर्ण फरिश्ता बन गये।

6.नाम, मान, शान का समर्पण:- बाबा इतने बड़े सच्चे संत थे। प्रजापिता नई सृष्टि की रचना के निमित्त, भविष्य सतयुगी विश्व के मालिक बनने वाले थे पर उनको ज़रा भी मान-सम्मान की प्राप्ति की इच्छा नहीं थी। वे जब मधुबन से बाहर सेवार्थ जाते तो भाई-बहनों को पहले से फूलों के हार आदि लाने से मना कर देते। वे चाहते, सम्मान का एक ही फूल काफी है। वे कहते, प्लेटफॉर्म पर ज्यादा भाई-बहनों को लाने की ज़रूरत नहीं। यूँ कहें कि वे हर प्रकार के दिखावे से दूर, शिव पिता के राइट हैण्ड, यज्ञ रक्षक, सच्चे कोहिनूर थे। जब कोई भक्त आत्मा बाबा के पैर छूना चाहती, बाबा ने नहीं छूने दिये, उन्हें सम्मान से ऊँचा उठाया, रूहानी दृष्टि देकर शक्तियों से संपन्न किया।

7. धन का समर्पण:- जब ओम् मण्डली की स्थापना हुई तो ब्रह्मा बाबा ने सारा ही धन सेकंड में माताओं-बहनों के नाम कर ट्रस्ट बना दिया। उन्होंने निराकार परमात्मा शिव पर इतना अटूट विश्वास कर लिया कि कभी लौकिक बच्चों का, परिवार का नहीं सोचा। धन का समर्पण करने के बाद कभी छुआ तक नहीं। जबकि वे बहुत बड़े धनाढ्य जौहरी थे पर धन समर्पण करने के बाद ज़रा भी उसमें आकर्षण न रहा।

8. परिवार का समर्पण:- बाबा ने अपनी युगल यशोदा मैया, बच्चे, बच्चियों को ईश्वरीय यज्ञ में समर्पित कर दिया। अपने मकान आदि सब सेवार्थ लगा दिये तथा समर्पित करने के बाद उन्होंने लौकिक बच्चों को भी वही सुविधायें दीं जो अन्य सभी भाई-बहनों को दीं। यह नहीं कि उनको कुछ विशेष मिले। बाबा ने कभी नहीं देखा कि यह मेरी लौकिक युगल है, यह बच्ची है, इन्हें मधुबन में अपने पास रखूँ, नहीं। उन्होंने अपनी युगल को, बेटी को मधुबन से बाहर ईश्वरीय सेवार्थ भेज दिया। कैसा अद्भुत था उनके परिवार का समर्पण। बाबा में परिवार के प्रति मोह का अंश मात्र न रहा, उन्होंने सर्व लौकिक संबंधों को अलौकिक में परिवर्तन कर दिया जिससे उनका सहज योग परमात्मा शिवबाबा से लगा और वे नष्टोमोहा, संपन्न, संपूर्ण बने।

9. खान-पान में समर्पण:- बाबा ने अपने ब्राह्मण जीवन में साधना को महत्व दिया, वे सदा ही अल्पाहारी रहे। उन्होंने कभी आसक्ति, तृष्णा के वश भोजन नहीं किया। वे सदा कहते, बच्चे, योगी माना ही अनासक्त। कोई भी कर्मेन्द्री आकर्षणवश कहीं न डूबे। लालच के वश कुछ नहीं खाना है। यहाँ तक कि बाबा ने एक बार यज्ञ में काफी दिन बच्चों को सिर्फ छाछ और बाजरे की रोटी खिलाई, चाहे बीमार भी थे, इससे उनकी कई बीमारियाँ भी मिट गई तथा खान-पान से आसक्ति भी मिट गईं। बाबा सदा सिम्पल खाकर, प्रभु प्रेम में लवलीन रहते। उनका कहना था 'जैसा अन्न, वैसा मन'। भोजन सदा ही शिवबाबा की याद में प्रभु-प्रसाद समझ स्वीकार करना है।

10. निद्रा का समर्पण:- बाबा ने अपनी नींद का भी त्याग कर वह समय सेवार्थ प्रयोग किया। उन्होंने अपनी नींद को भी सतोप्रधान बना लिया। रात्रि को वे सिर्फ चार घंटा ही विश्राम करते, वो भी योग-निद्रा होती। उन्हें अपने एक-एक सेकंड की वैल्यु थी। वे तो कहते कि संगम का एक-एक सेकंड पदमों की कमाई करने का है। संगम पर अधिक सोना भी खोना है। अभी तो जाग कर सारे कल्प की कमाई करनी है। कई बार रात को जागकर, बच्चों की संभाल करते, उनकी सर्दी-गर्मी का ख्याल रखते। रात को जागकर, बांधेली माताओं को सकाश देते, रोगियों को करंट देते।

11.लोकलाज, जाति, कुल का समर्पण:- बाबा ने कभी लोकलाज का, कुल का ख्याल नहीं किया। हर जाति, धर्म वालों को अपने पास रख राइट हैण्ड बनाया। बाबा के पास

हरिजन भी मुरली सुनने आते, उनको कभी यह संकल्प नहीं आता कि मैं इतना बूढ़ा जौहरी, मेरी इतनी ऊँची ख्याति देश-विदेश में है। वे तो सदा ही कहते, बच्चे, तुम्हें अबलाओं, गणिकाओं, वेश्याओं का भी उद्धार कर, भारत को स्वर्ग भूमि, शिवालय बनाना है। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी सिंधी भाषा का त्याग कर, हिंदी बोलने को सर्वोच्च स्थान दिया। आज भी सब दादियाँ हिंदी भाषा का ही प्रयोग करती हैं।

12.देह-भान का समर्पण:- बाबा इतनी बड़ी अथॉरिटी और रॉयल घर के थे। उनका ऊँचा खानदान और पैसे वाले संबंधी थे। बाबा ने सब कुछ भुला दिया। यहाँ तक कि बाबा को कभी बच्चे प्यार से फोटो निकालने को कहते तो बाबा ना कर देते कि बच्चे यह तो पुराना रथ है, शिवबाबा का फोटो तो आयेगा नहीं, इस तमोप्रधान शरीर का फोटो लेकर क्या करेंगे। वे कहा करते कि यह शरीर तो पुरानी जुत्ती है, इसका तुम्हें कुछ भी श्रृंगार आदि नहीं करना है, यह तो सिर्फ संगमयुग में शिवबाबा की याद की कमाई करने का साधन मात्र है। उन्हें कभी अपनी सुंदरता, पर्सनेलिटी का देहभान नहीं था। वे तो साधारण टेबल पर बैठकर प्यार से ब्रह्मा भोजन करते। ज़रा भी अभिमान की दृष्टि नहीं थी उनकी। तब ही तो वे शिवबाबा की याद से सहज अशरीरी बन जाते।

13.पहनने में भी समर्पण:- बाबा ने अपने जीवन में सादगी को सर्वोच्च स्थान दिया, वे सदा सादे सूती वस्त्र पहनते। बिना कॉलर का कुर्ता, सादगी भरे खड़ाऊ पहनते, सिम्पल शॉल ओढ़ते। उन्होंने कभी यहाँ राजाई ठाठ के, टेरीकॉट के ऊँचे कलर्ड कपड़े नहीं पहने। आज भी बाबा की प्रेरणा से समर्पित ब्रह्मा वत्स, सादगी युक्त श्वेत वस्त्र पहनते हैं जिन्हें देखकर दुनिया के लोग बहुत खुश होते हैं। यह है बाबा की समर्पणमयता की कमाल।

14.त्याग का भी समर्पण:- बाबा ने सदा त्याग का भी त्याग किया। उन्होंने कभी नहीं कहा कि मैंने इतना त्याग किया, कुर्बानी की, मैंने धन लगाया, मैंने इतनों की पालना की, इतना लायक बनाया। उन्होंने मकान आदि बनाकर अपना नाम नहीं लगाया। वे सदा त्याग को अपना भाग्य समझते। उन्हें कभी त्याग का अभिमान, नशा नहीं था। वे तो सदा करनकरावनहार शिवबाबा की स्मृति में बेहद के वैरागी रहे।

15.सेवा में समर्पण:- प्यारे बाबा ने सदा ही यज्ञ की हर सेवा को समान महत्व दिया। हर कर्म करते वे कर्मयोगी बनकर रहते, चाहे वो सब्जी काटने की सेवा हो, अनाज सफाई की सेवा हो, पत्थर उठाने की सेवा हो, चाहे ज्ञान-दान करने की, वे हर सेवा प्यार से कर, हर कर्म का यादगार बनाते। उन्हें हर समय ख्याल रहता 'जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और करेंगे।' हर सेवा में हाँ जी कहना उन्होंने अपनी दिनचर्या से ब्रह्मावत्सों को सिखाया। हर सेवा में वे सदा इकानामी का भी ख्याल रखते थे। वे कहते थे कि यह शिवबाबा का यज्ञ है, यहाँ पर गरीब बच्चे अपनी पाई-पाई सफल करते हैं, जो अच्छी रीति से सेवा में लगनी चाहिये ताकि देने वाले और सेवा में सफल करने वाले – दोनों का अविनाशी भाग्य 21 जन्म के लिए बन जाये। बाबा कहते, सिर्फ सेवा नहीं, सेवाभाव से सेवा कर भाग्य बनाना है।

16.वृत्ति का समर्पण:- हर कर्म करते बाबा की सदा उपराम वृत्ति रही। वे सदा सब कुछ करते, साक्षी भाव में रहे। उन्हें न किसी के व्यर्थ सुनने का, न सुनाने का शौक था। उनकी भावना हर आत्मा प्रति शुभ और शुद्ध थी। उनके दिल में दया, रहम कूट-कूट कर भरा था। उन्होंने सदा निंदक को भी अपना सच्चा मित्र समझा। बाबा सदा कहते, वृत्ति से वायुमंडल बनता है इसलिए हर एक ब्राह्मण को अपनी श्रेष्ठ वृत्ति बनाकर वायुमंडल को शुद्ध बनाना है जिससे हर आत्मा मधुबन से, सेवाकेन्द्र से शांति की शक्ति, खुशी, पवित्रता की पावर भरकर जाये। समय की पुकार है, ऐसे प्यारे ब्रह्मा बाबा को फालो कर हम भी बनें संपन्न और संपूर्ण। ❖

बाबा ने कहा, बच्ची ध्यानी, ज्ञानी, योगी है

● **ब्रह्माकुमारी भूषण कुमारी, दिल्ली (शक्ति नगर)**

ब्रह्मा बाबा जब दिल्ली में मेजर की कोठी में आये थे तो दिल्ली कमला नगर की पार्टी तथा गुलज़ार दादी जी के साथ हम बाबा को मिले। बाबा की दृष्टि जैसे ही मुझ पर पड़ी, मुझे लगा कि बाबा को तो मैं रोज़ ही देखती हूँ। बाबा ने भी मुझे देखकर दादी को कहा, यह बच्ची ध्यान में जाती है, यह ध्यानी, ज्ञानी और योगी है। थोड़ी देर बाद बापदादा को हरेक से व्यक्तिगत मुलाकात करनी थी। मैं और मेरे युगल लालचंद जी जब बाबा के सामने आये तो बाबा ने इतनी प्यार भरी दृष्टि दी जो एक सेकंड में हम अशरीरी हो गये। वह अनुभव अभी तक याद है। बाबा ने बहुत ही प्यार से पूछा, दोनों में से आगे कौन है? हम दोनों एक-दूसरे को देखने लगे कि बाबा को क्या उत्तर दें? फिर बाबा ने खुद ही कहा, बच्चे, तुम दोनों घर-गृहस्थ में रहकर एक-दूसरे से आगे दौड़कर गृहस्थी की गाड़ी को ठीक चलाते चलो।

बच्चों का हक है बाप पर

एक दिन सुबह क्लास के लिए जब मेजर की कोठी पर गये तो मैंने सोचा, बाबा को गुडमॉर्निंग करके आती हूँ। दरवाज़े पर सेवा में खड़ी बहनों ने मुझे ठहरा दिया। मेरे आँसू निकल पड़े। बाबा को तुरंत पता पड़ गया कि बच्ची दरवाज़े पर खड़ी है। बाबा ने आवाज़ दी, आओ बच्ची, बाबा मिलने के लिए ही तो आया है। मैं झिझकती हुई बाबा के पास पहुँची तो बाबा ने महावाक्य उच्चारे, बाप और बच्चों के बीच झिझक नहीं होती, कशिश होती है। बाबा केसर वाला दूध ले रहे थे। मेरे ना-ना कहने पर भी बाबा ने आधा गिलास मुझे पिला दिया और साथ ही कहा कि बाप की हर वस्तु पर बच्चों का हक है। संगमयुग पर मुझे यह साकार में आकर करके दिखाना पड़ता है।

आसक्ति छुड़ा दी

कुछ दिनों पश्चात् मधुबन जाना हुआ। वहाँ पहुँच कर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे अपने घर आ पहुँचे हैं। मैंने नाक में कोका, कानों में टॉप्स, हाथों में अंगूठी आदि पहनी हुई थीं। बाबा ने गोद में लेकर कहा, बच्ची, ये झूठे ज़ेवर क्यों पहने हैं? सच्चा बाप मिला है तो ज़ेवर भी सच्चे सोने के पहनने हैं। मुझे बाबा का भाव समझ में नहीं आया। मैंने कहा, बाबा, ये सच्चे सोने के हैं, इनमें असली नग हैं। बाबा ने फिर कहा, बच्ची, इस झूठी दुनिया में हर चीज़ झूठी है, सच्ची चीज़ें तो सतयुग में मिलेंगी। तब मुझे बात समझ में आई। मैंने उसी समय सब ज़ेवर उतार दिये। मेरा संदेशी का पार्ट है। भोग लगाते समय ज़ेवर पहनकर स्टेज पर बैठना शोभता नहीं। बाबा ने बड़े तरीके से, प्यार से आसक्ति भी छुड़ाई और सेवा के लिए तैयार भी किया।

चपाती बनानी सिखाई

कपड़े सीने मुझे आते थे। मैंने बाबा को बताया। बाबा ने फौरन मुझे अपने सामने बिठाकर सिलाई की बारीकियाँ ऐसे समझाई मानो संपूर्ण बनने वाली आत्मा में पहले ही सोलह कलायें भरी हुई हैं। मेरे युगल को खाना बनाना नहीं आता था। बाबा ने अपने हाथ से चपाती बनानी सिखाई और कहा कि बच्चे, जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख दूसरे करेंगे।

तीसरे बच्चे की जगह कहाँ है?

एक दिन मैं दोनों बच्चों को लेकर सोई हुई थी। बाबा रात्रि चक्कर लगाने आये। बाबा ने मेरे से पूछा, बच्चे, तीसरे बच्चे के लिए जगह कहाँ है? ये (लौकिक) बच्चे तो हर जन्म अपने साथ सुलाते रहे हो, यही थोड़ा-सा समय है जो शिव बालक का अनुभव भी करना है। बाबा का कहने का भावार्थ यह था कि लौकिक और पारलौकिक दोनों ही साथ-साथ याद रहें।

प्रदर्शनी या मेले में जाते थे तो लौटने पर बाबा पूछते थे, कितने ग्रुप समझाये? फिर अपने हाथों से खिलाते थे। एक दिन बाबा ने कहा, बच्चे, यह नहीं देखो कि इसकी पर्सनेलिटी अच्छी है, इसे ज्ञान समझायें। बाबा के रत्नों पर तो हर आत्मा का अधिकार है। गुदड़ी में छिपे लाल होते हैं। इस प्रकार की अनेक सुंदर-सुंदर प्रेरणायें समय-समय पर बाबा से प्राप्त हुईं और जीवन में बहुत काम आईं। ❖

बाबा ने कहा, बच्चा मन-बुद्धि से समर्पित है

● ब्रह्माकुमार विनोद जैन, शान्तिवन (ट्रोमा हॉस्पिटल)

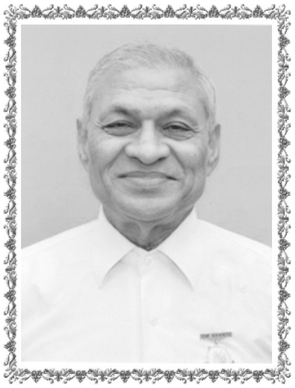

मेरा जन्म उ.प्र. के मेरठ शहर में सन् 1943 में हुआ। माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। पिताजी नियमों में इतने सख्त थे कि जब तक हम जैन मंदिर न जायें तब तक नाश्ता नहीं करना होता था। सन् 1963 में धनबाद में इंजीनियरिंग में चयन के बाद मैं इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स में इंजीनियरिंग करने लगा और वहीं हॉस्टल में रहने लगा। हॉस्टल के नजदीक जैन मंदिर नहीं था इसलिए दर्शन किये बिना नाश्ता करने में बाधा आती थी। मेरा मन अशांत रहने लगा। एक जैन साधु से मिला तो उन्होंने कहा, पारसनाथ मंदिर (धनबाद से 50 कि.मी. दूर जिसे शिखर जी के नाम से जाना जाता है) की तीन बार यात्रा करेंगे तो आपको भगवान मिल जायेगा। उस यात्रा के नियम कड़े थे जैसेकि रात को 12 बजे यात्रा प्रारंभ के समय ठंडे पानी से स्नान करना, नंगे पाँव और निराहार रहकर ही जाना और आना, यात्रा के दौरान किसी भी व्यक्ति, वस्तु का सहारा नहीं लेना।

अनोखे राजयोग का परिचय

उस समय मैं युवक था। मैंने चार दिन में चार यात्रायें लगातार कर ली। यात्रायें पूरी कर धनबाद लौटा। इंजीनियरिंग का पोस्ट ऑफिस अलग था। दोपहर लंच से पहले मैं पोस्ट ऑफिस गया। मैंने एक संस्थान से योग की पुस्तक मँगवाई थी, वह पोस्ट से आई थी। मैं उसे देख रहा था। उन दिनों ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल भाई भी उसी कॉलेज में इंजीनियरिंग कर रहे थे। वे भी पोस्ट ऑफिस के सामने खड़े थे। उन्होंने मुझे योग की पुस्तक का अवलोकन करते देखा। उन्होंने कहा, इस योग से आपको एक जन्म का स्वास्थ्य लाभ मिलेगा परंतु मैं ऐसा राजयोग जानता हूँ जिससे आपको 21 जन्म का लाभ मिलेगा। यह सुनते ही अंतरात्मा जागृत हो गई। मुझे यह बात जैन धर्म के बिल्कुल अनुकूल लगी। जैन धर्म भी कहता है, आप इस जन्म में जो करेंगे, वो आपको आगे के जन्मों में मिलेगा। अत: मैं उनसे योग के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हो गया लेकिन वो ज्ञान में नये-नये थे इसलिए थोड़ा-थोड़ा बताते थे।

अपने मस्तक में लाइट दिखाई दी

एक दिन मोहन भाई सिन्द्री गये, वहाँ सेवाकेन्द्र था और ब्रह्माकुमारी बहन भी रहती थी। वहाँ से वे एक पर्चा लेकर आये। पर्चे में शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य था। मैंने पर्चा पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा, अब शीघ्र ही धनबाद में भी सेन्टर खुलने वाला है तब आपको विस्तार से राजयोग के बारे में जानने को मिलेगा। आठ मार्च, सन् 1964 को धनबाद में सेन्टर खुल गया। वहाँ कानपुर वाले गुप्ता जी, ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र बहन, ब्रह्माकुमार संतराम वकील, गंगे दादी जी सेवार्थ आये। मुझे अगले दिन (9 मार्च को) सेन्टर आने का निमंत्रण मिला। जैसे ही मैंने दायाँ पैर सेवाकेन्द्र के अंदर रखा, मुझे मेरे मस्तक में लाइट दिखाई दी अर्थात् आत्म-अनुभूति हुई। उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि भगवान यदि मिलेगा तो इसी सेवाकेन्द्र में मिलेगा।

मैं साइंस का विद्यार्थी था इसलिए मन में प्रश्न उठने स्वाभाविक थे पर मैंने निश्चय किया कि मैं प्रश्न नहीं पूछूँगा, बहन जो कहेगी, मानूँगा। फिर मेरा कोर्स शुरू हो गया। बहन ने पूछा, भगवान कहाँ रहता है? मैंने कहा, सब जगह। उन्होंने कहा, भगवान तो परमधाम में रहता है। मैंने कहा, ठीक

है, परमधाम में रहता है। आत्मानुभूति के कारण मन इतना आश्वस्त हो गया था कि तर्क-वितर्क रह ही नहीं गये थे।

हॉस्टल में भी आश्रम से पालना

सन् 1964 में बाबा की मुरलियाँ चलती थीं, महापरिवर्तन होने वाला है। मैंने और मोहन सिंघल भाई ने निर्णय लिया कि हम बाबा की याद में हॉस्टल में खाना खुद ही बनायेंगे। हमने बनाना शुरू कर दिया। कुछ दिन तो ठीक चला परंतु कुछ शरारती इंजीनियरिंग स्टूडेन्टस ने एक दिन हमारे भोजन-स्थान को अस्त-व्यस्त कर दिया। इससे हमारा अलग से खाना बनाने का उमंग फीका पड़ गया। फिर हम दोनों ने बाबा को सारा समाचार लिखा। बाबा का डायरेक्शन आया कि आज से दोनों बच्चों का खाना धनबाद सेवाकेन्द्र पर ही बनेगा। निमित्त दादी देवी सब्ज ने तीन साल इसे प्यार से निभाया। आश्रम से टिफिन हॉस्टल में आ जाता था।

मन-बुद्धि से समर्पित का वरदान मिला

मुरलियों में सृष्टि-परिवर्तन के महावाक्य सुनकर मैंने बाबा को पत्र लिखा, बाबा, मैं चार साल की इंजीनियरिंग नहीं करना चाहता। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, इसे पूरा करो, फिर बाबा राय करेंगे। इंजीनियरिंग पूरी करने पर मैंने बाबा को पुनः पत्र लिखा, बाबा, पढ़ाई तो पूरी हो गई पर मैं अभी नौकरी नहीं करना चाहता।

साकार बापदादा का हस्तलिखित पत्र

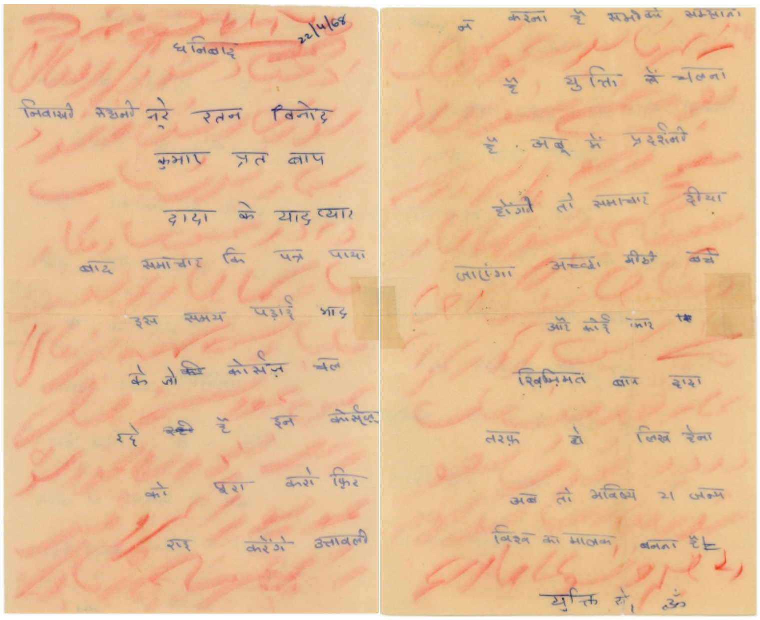

बाबा ने कहा, बच्चे, दो साल का स्नातकोत्तर (Post Graduate) करो। यह पढ़ाई भी पूरी करके मैंने पुनः बाबा को कहा, बाबा, मैं ईश्वरीय सेवा में समर्पित होना चाहता हूँ, नौकरी नहीं करना चाहता। बाबा ने मुझे वरदान दिया, बच्चे, तुम मन-बुद्धि से समर्पित हो। शरीर से समर्पित होना आवश्यक नहीं। मेरी आज्ञा से तुम नौकरी करो। फिर मैं माइन्स में सेफ्टी ऑफिसर (सुरक्षा अधिकारी) के रूप में नियुक्त हो गया।

कर्मों का लेखा सौंपा बाबा को

बाबा ने मुरलियों में कहा, इस जन्म में जो पाप आपसे हुए हैं (जाने या अनजाने में) वो मुझे लिखकर दो तो मैं आधा माफ कर दूँगा। मैंने 64 पन्नों की नोटबुक ली और बचपन से लेकर उस समय (22 साल की आयु) तक किये गये जिन-जिन कर्मों की स्मृति थी, सब लिख दिये। उस नोटबुक को लेकर पहली बार मधुबन आया। बाबा ने मुझे झोंपड़ी में मिलने का समय दिया। मैं झोंपड़ी के बाहर खड़ा था। बाबा ने मुझे अंदर बुलाया। मैंने कहा, बाबा, मैं पाप लिखकर ले आया हूँ, आधे माफ कर दो। बाबा ने कहा, बच्चे, बाबा यह लिखत नहीं पढ़ेगा, बाबा को अपने मुख से सुनाओ। मैंने रजिस्टर पढ़ना शुरू किया और देखा, बाबा का राइट हैण्ड हलका-सा हिलता था मानो मेरे पापों से मुझे 50% मुक्ति मिलती जा रही थी। बाबा के सामने बैठकर मुझे लगा, मैं दर्पण के सामने बैठा हूँ, छिपा कैसे सकता हूँ।

पढ़ते-पढ़ते मुझे अपनी कुछ और गलतियाँ याद आईं, मैंने वो भी सुना दीं यह सोचकर कि अभी तो सुनहरा अवसर है, नहीं तो ये सौ प्रतिशत रह जायेंगी। सुनाने के बाद मैं एकदम हलका हो गया, वो बातें मुझे दुबारा याद नहीं आईं और बाबा का मुझ पर बहुत विश्वास बैठ गया।

बाबा से ऑटोग्राफ मांगे

मुझे बड़े लोगों के ऑटोग्राफ लेने का शौक था। मैं आटोग्राफ बुक लेकर गया था। मैंने बाबा को कहा, बाबा, आटोग्राफ बुक में सिगनेचर कर दो। बाबा ने कहा, ईशू बच्ची को दो, फिर बाबा बतायेंगे। अगले दिन मैं ईशू दादी के पास गया और पूछा, बाबा ने साइन किये? ईशू दादी कहती हैं, बाबा कोई ह्यूमन बिंग (देहधारी मनुष्य) नहीं हैं। मैं समझ गया कि साइन की कोई वेल्यू नहीं है जिसने आदि-मध्य-अंत का सारा रहस्य सुनाकर हमारे लिए मुक्ति-जीवन्मुक्ति का द्वार खोल दिया, उनसे इस छोटी बात का क्या आग्रह! इसके बाद मेरा वह शौक सदा के लिए छूट गया।

बाबा की हर बात राज़ भरी

सन् 1968 में मधुबन में दो भाई जम्मू के और मैं, तीन की पार्टी थी। बाबा ने कहा, बच्चे, आज बाबा आपसे मिलेंगे। हम तीनों बाबा के कमरे के दरवाज़े के आगे खड़े थे। बाबा ने लच्छू दादी को कहा, बाबा से मिलने के लिए इन दो भाइयों को पहले बुलाओ और विनोद को कहो, इंतज़ार करे। यह देख बहुत संकल्प चले कि मैं इतना नज़दीक हूँ, मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? फिर वो दोनों बाहर आये और बाबा ने मुझे बुलाया। बाबा ने कहा, बच्चे, मैं जानता हूँ, आप क्या सोच रहे हो? तुम सोच रहे हो ना कि मुझे पहले क्यों नहीं बुलाया? इसका कारण है, मुझे आपको गोद देनी थी, उन दोनों को नहीं देनी थी। यदि आपको पहले बुलाता तो वे पर्दे में से आपको गोद देते हुए देखते और उनके संकल्प उठते इसलिए ऐसा किया। जब बाबा की गोद में गया तो मुझे अव्यक्त स्थिति की अनुभूति हुई। एकदम लाइट की अनुभूति। बाबा का शरीर रूई की तरह कोमल था। बैठते ही अशरीरी हो जाते थे, गहन सुख-शांति की अनुभूति होती थी।

कर्मों द्वारा सीख

बाबा डायरेक्ट कोई बात नहीं कहते थे, कर्मों से सिखाते थे। एक बार मधुबन में गेहूँ आये। भोली दादी ने कहा, बाबा, गेहूँ साफ करने हैं और भाई-बहनें नहीं मिल रहे हैं। बाबा ने कहा, बोरी खोलो और थालियाँ ले आओ। बाबा ने गेहूँ साफ करने शुरू कर दिये, बाबा को देख सब भाई-बहनें आ गये, आधे घंटे में ही सारे गेहूँ साफ हो गये।

मात-पिता का प्यार

सन् 1965 तक तो मातेश्वरी साकार में थी। इसके बाद बाबा ने माता और पिता दोनों का प्यार देना शुरू कर दिया। रात्रि क्लास के बाद बाबा बच्चों के कमरों में चक्कर लगाते थे, उनके साथ लच्छू दादी होती थी। हमारे ओढ़ने के कपड़े को बाबा हाथ लगाकर देखते थे कि बच्चे को ठंडी तो नहीं लगेगी। फिर लच्छू दादी को कहते थे, इनको एक कंबल और दो। मच्छरों से बचाने के लिए हर कमरे में स्प्रे कराते थे। फिर पूछते थे, बच्चे, दूध पिया? फिर लच्छू दादी को कहते थे, इनको दूध दो।

भगवान के हाथ का अंगूर

एक बार बाबा ने मुरली पूरी की और झोंपड़ी के पास बगीचे में गये। मैं भी बाबा के साथ था। बाबा बहुत लंबे थे, उन्होंने एक अंगूर तोड़कर मेरे मुख में डाल दिया। फिर पूछा, कैसा है? मैंने कहा, बाबा बहुत मीठा है। मन

में भावना उठी, भगवान के हाथ से अंगूर मिले, उससे ज्यादा मीठा क्या होगा? एक बार मैंने बाबा ने प्रार्थना की, बाबा, मुझे आपके साथ फोटो खिंचवाना है। पहले बाबा ने कहा, बाबा फोटो नहीं खिंचवाते, फिर कहा, अच्छा चंद्रहास को बुलाओ। मैंने बुलाया। बाबा खड़े हो गये। बाबा ने चंद्रहास को डायरेक्शन दिया, फोटो निकालो। चंद्रहास ने फोटो निकाला। तीन फोटो निकाले, फिर बाबा चले गये, रुके नहीं। लेख के साथ छपा फोटो वही है जिसमें बनारस की सुरेन्द्र बहन तथा एक थाइलैंड का भाई भी है।

सुप्रीम सर्जन बाबा

बाबा के पास आठ-दस गऊएँ थीं जो बहुत सुंदर, स्वस्थ थीं। बाबा ने उनके गोपी आदि नाम रखे थे। एक बार बाबा ने गायों के लिए भूसा मँगाया। भूसा आँगन में उतारा गया। हम पाँच कुमारों ने उसे टोकरियों में भरकर पीछे जहाँ गाय रहती थी, वहाँ जमा कर दिया। बाबा हिस्ट्री हॉल के कोने पर खड़े थे। हम जब टोकरी भरकर ले जाते तब भी और जब लौटते थे तब भी, बाबा बड़ी पावरफुल दृष्टि देते थे। उस सेवा में बहुत मज़ा आया। सेवा पूरी होने के बाद मैं बाबा के पास गया, मैंने कहा, बाबा, गले में धूल चली गई है। बाबा ने मुझे अपने हाथ से गुड़ खिलाया, जिसे खाते ही गला एकदम ठीक हो गया। मुझे बाबा में सर्जन का रूप नज़र आया।

बाबा की समय पाबंदी

जब मधुबन आता था, बाबा मुझे पांडव भवन में रात के पहरे की ड्यूटी देते थे। मुझे नशा चढ़ता था कि भगवान ने मुझमें विश्वास रखा है, सुरक्षा की ज़िम्मेवारी दी है। बाबा कहते थे, सब्जी काटो, रोटी बनाओ। इस प्रकार भण्डारे की सेवा में भी बहुत मज़ा आता था। जिस दिन हमें लौटना होता था, रास्ते का भोजन हमें खुद बनाना होता था। बाबा भंडारे में ठीक 6 बजे आते थे और दृष्टि देते थे। बाबा का आना इतना एक्यूरेट होता था जो हम अपनी घड़ी मिला सकते थे।

बच्चे हर बात में आगे

एक बार थाइलैंड के एक शहर के गवर्नर का लड़का आबू में आया। वह बनारस यूनिवर्सिटी में संस्कृत पढ़ रहा था। उसके पास कैमरा था। वह ब्रह्मा भोजन में शामिल हुआ। वह ब्रह्मा बाबा का फोटो लेने लगा। बाबा ने कहा, पहले मेरे बच्चों का फोटो लो। बाबा हर बात में अपने बच्चों को आगे रखते थे।

बाबा रमणीक भी थे

बाबा बहुत रमणीक थे। हम मधुबन में कभी-कभी ईश्वरीय सेवा से संबंधित मीटिंग करते थे और सेवा की योजना को फाइनल करने के लिए बाबा को बुलाते थे। एक बार बाबा आये और हिस्ट्री हॉल में उस संदली पर बैठ गये जिस पर बच्चे बैठते थे। हिस्ट्री हॉल में बाबा तथा मम्मा की अलग-अलग संदली थी और बच्चों के लिए भी थी। बाबा को बच्चों की संदली पर बैठे देख सब अंदर-अंदर मुसकराने लगे। तब बाबा ने कहा, पता है आज मैं बच्चों की संदली पर क्यों बैठा हूँ, इसलिए कि आज मैं बच्चा बनकर आया हूँ, बाप नहीं। टोली बाँटते समय बाबा कहते थे, जिसने दो साल से झूठ नहीं बोला, वह टोली बाँटे। इस प्रकार बाबा सेवा भी करवाते और अंतर्मुखी भी बनाते। बाबा किसी को समझानी देते थे तो पहले उस आत्मा का गुण वर्णन करते थे। फिर कहते थे, तुम सोना तो हो, थोड़ा-सा सुधार कर लोगे तो सोने में सुहागा हो जायेगा।

बाबा का दिया जीवन बाबा को समर्पित

मधुबन से वापस लौटते समय मैं बाबा से छुट्टी लेने गया। बाबा ने आंगन में खड़े होकर रूमाल हिलाकर छुट्टी दी। फिर टैक्सी चल दी। लगभग 15 मिनट के बाद टैक्सी रुक गई। पीछे का एक पहिया निकला और धुरी में पुन: फँस गया। टैक्सी ड्राइवर ने कहा, यह पहली बार हुआ है कि पहिया निकला और वापस फँस गया। मेरे मन में आया कि बाबा ने ही मुझे बचाया है। यह जीवन बाबा का दिया हुआ जीवन है अत: बाबा की सेवा के लिए ही समर्पित है। ❖

बाबा ने हर लिया मेरे मन को

● ब्रह्माकुमार बलदेव राज गुप्ता, लुधियाना

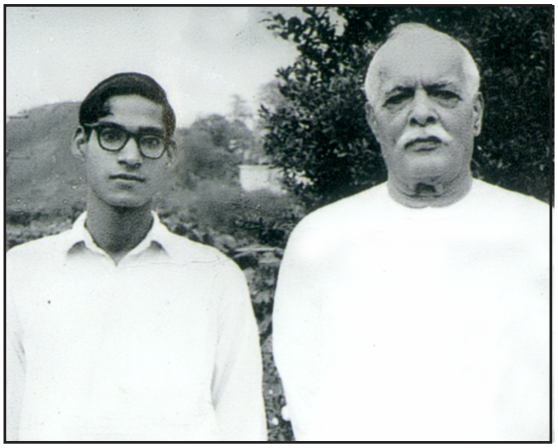

बचपन से ही मुझे परमात्मा से मिलने की इच्छा थी। मेरे माता-पिता धार्मिक विचारों के थे। समय-समय पर कई धार्मिक अनुष्ठान जैसे कि जगराता, हवन, यज्ञ, शिव की पूजा आदि घर में होते रहते थे। धार्मिक पुस्तकें जैसे गीता, रामायण, महाभारत आदि ही हमारे घर का साहित्य था। इन सब बातों का मेरे जीवन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा।

मन में उठते थे सवाल

जब मैं आठवीं कक्षा में था तो मेरे मन में दो प्रश्न सदा घूमते रहते थे। पहला यह कि क्या हम कभी परमात्मा को मिलेंगे भी या नहीं? जैसे हमारे पूर्वज भक्ति करते-करते, झांझ बजाते-बजाते संसार से चले गये, परमात्मा को बेअन्त, अपार कहते रहे, क्या मैं भी ऐसे ही चला जाऊँगा? आखिर परमात्मा कब मिलेंगे, कैसे मिलेंगे? कई बार यह धारणा भी बन जाती थी कि परमात्मा कहीं न कहीं अवश्य आये होंगे और अपने भक्तों को अवश्य मिल रहे होंगे। दूसरा प्रश्न यह रहता था कि जब एटम बमों से या प्राकृतिक आपदाओं से सृष्टि का विनाश होगा तो उसके बाद विश्व का क्या होगा, क्या धरती रहेगी, आसमान रहेगा, मानव रहेगा, वनस्पति रहेगी? शास्त्रों में लिखा है कि प्रलय काल में सारी धरती जलमयी हो जायेगी। जल, अग्नि में विलीन होगा और अग्नि, वायु में। वायु, आकाश तत्व में विलीन हो जायेगी तथा आकाश, ब्रह्म तत्व में विलीन होगा। अंत में ब्रह्म ही ब्रह्म रहेगा तथा कल्प पहले की तरह ब्रह्म से सृष्टि पुनः उत्पन्न होगी।

सवालों के उत्तर मिले

सन् 1961 में मैट्रिक की परीक्षा पास करके जालंधर में एक मेडिकल कालेज में दाखिल हुआ। वहाँ किसी परिचित व्यक्ति के कहने पर मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम में पहुँचा। आश्रम पर 'पवित्रता सप्ताह' का आयोजन किया गया था। एक बहन यज्ञ का इतिहास सुना रही थी। उससे मुझे केवल इतना ही पता चला कि भगवान इस सृष्टि पर आ चुके हैं तथा सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। इस भारत में श्रीकृष्ण फिर जन्म लेंगे और भारत फिर सुखमय बनेगा। यह बात मेरी बुद्धि में बड़ी अच्छी तरह से बैठ गई और मुझे मेरे दोनों प्रश्नों का उत्तर मिल गया।

बाबा से मिलने की तीव्र इच्छा

मुझे पता चला कि यहाँ हर रोज सुबह चार बजे क्लास होता है, तब से ही सुबह स्नानादि करके क्लास में जाना शुरू कर दिया। किसी ने कोर्स भी नहीं कराया, बस एक दिन एक बहन ने त्रिमूर्ति के चित्र पर कुछ समझाया, वही मेरा कोर्स था। लगातार क्लास करते-करते, मुरलियाँ सुनते-सुनते अपने आप ही सारा ज्ञान बुद्धि में आ गया। बाबा पर निश्चय बहुत जल्दी बैठ गया। न कोई प्रश्न पैदा हुआ, न कोई संशय आया। ब्रह्मा तन में परमात्मा शिव आया है और वह ज्ञान दे रहा है, यह मुझे पक्का निश्चय हो गया। ज्ञान में आते ही मैंने आश्रम की ऊपरी मंज़िल पर एक कमरा किराये पर ले लिया, वहीं रहने लगा। दैवी बहनों के साथ ऐसे घुल-मिल गया जैसे कि हम एक ही ईश्वरीय परिवार के सदस्य हैं। उस समय ब्रह्माकुमारियों के बारे में लोगों में बहुत भ्रांतियाँ थीं इसलिए मुझे मेरे माता-पिता रोकने लगे परंतु मेरी लगन बढ़ती ही जा रही थी और बाबा से मिलने की इच्छा भी तीव्र होती जा रही थी।

पवित्रता का वरदान

पहली बार मैं बाबा से मेजर की कोठी में देहली में मिला। मिलते समय जब बाबा ने बाँहों में लेकर मुझे गले लगाया तो बहुत ही अच्छा लगा। ऐसा लगा मानो बाबा ने मुझे पवित्रता का वरदान दे दिया है। इसके बाद मेरे मन में कभी ज़रा-सा भी अपवित्र संकल्प आता तो तुरंत यह विचार आता कि कितनी पवित्र हस्ती का संग करके आया हुआ हूँ! यह संकल्प आते ही मेरा स्वरूप उतना ही पवित्र बन जाता। इस अनुभव की छाप आज भी मेरे मन पर है।

बाबा के साथ के सुनहरे पल

कालेज में पढ़ते समय मैंने दो बार मधुबन धाम की यात्रा की। मेरे मन में बाबा के साथ फोटो खिंचवाने की इच्छा हुई तो मैं बाबा के पास जाकर खड़ा हो गया तथा बाबा के साथ फोटो खिंचवाई। बाबा ने कहा कि बच्चे ऐसा पुरुषार्थ करो जो सतयुग में कृष्ण के साथ आओ। बाबा के साथ झूला झूलने का भी अवसर मिला। दीदी मनमोहिनी जी झूला झुलाती थी। बाबा के साथ बैडमिंटन खेलना, ब्रह्मा भोजन करना आदि सुनहरे पल आज भी जब अतीत के पर्दे पर उभरते हैं, तो स्वयं को बहुत ही सौभाग्यशाली समझता हूँ।

एक बार हिस्ट्री हॉल में जब ब्रह्मा भोजन परोसा गया तो बाबा ने कहा, मेरे मीठे बच्चो, शिवबाबा के भंडारे से ब्रह्मा भोजन स्वीकार करो। उस समय मैं बाबा के पास ही बैठा था। बाबा के मुख से ये शब्द सुनकर बहुत ही आनन्द आया। फिर बाद में उसी हॉल में दादी प्रकाशमणि जी के साथ ब्रह्मा भोजन हो रहा था तो भोजन परोसने के बाद दादी ने कहा, बाबा के मीठे-मीठे बच्चो, बाबा के भण्डारे से ब्रह्मा भोजन स्वीकार करो। तब पुन: बाबा के कहे शब्द कानों में गूंजने लगे। बाबा से जब विदाई लेकर आते थे तो बाबा का एक अव्यक्त-सा रूप आँखों में समा जाता था और ऐसे लगता था जैसे बाबा हमारे साथ ही आ रहे हैं। बाद में भी वही छवि आँखों में समाई रहती थी और अपने आपसे अलौकिकता तथा दिव्यता का अनुभव होता रहता था।

जितने महान उतने साधारण

बाबा वास्तव में जितने महान थे, देखने में उतने ही साधारण थे। उनका रूप तथा व्यवहार ज़रा भी ऑफिशियल नहीं था। बड़े ही मिलनसार व सरल थे। एक बार बाबा से विदाई लेकर वापिस आना था, बाबा चारपाई पर आराम कर रहे थे। मेरी टीचर बहन मुझे बाबा के पास ले गई। बाबा झट उठे, चारपाई पर बैठे ही बैठे बाबा ने मुझे गोद में ले लिया और प्यार से विदाई दी। इस प्रकार बाबा में बाप का रूप प्रत्यक्ष नज़र आता था। जैसे बाप बच्चों के लिए आराम की परवाह न कर उन्हें सुख देने के लिए तत्पर रहते हैं वैसे ही बाबा भी थे।

बाबा का दिल से शुक्रिया

ज्ञान में आते ही इस कलियुगी दुनिया से मुझे वैराग्य आ गया था। मान, शान, फैशन, धन, ऐश्वर्य से मेरी बुद्धि छूट गई और मुझे ऐसा लगता था जैसे कि बाबा ने मेरा मन ले लिया हो। जैसा कि भागवत् में वर्णन है कि गोपियों का मन, गोपियों के पास न होकर कृष्ण के पास था, इसलिए उन्हें 'कृष्णा-ग्रहित मनसा' कहा जाता था। जब भी कृष्ण की बंसी बजती तो उन्हें भागना ही पड़ता था क्योंकि कृष्ण ही उन्हें खींचता था। वैसे ही मैं भी क्लास तथा मुरली के बिना नहीं रह सकता था। कहीं ईश्वरीय सेवा का कार्यक्रम होता तो वहाँ भाग जाता था। मुझे ऐसा लगता था कि मुझमें ज्ञान एक ताकत की तरह आया। इस ताकत ने यह भी नहीं सोचने दिया कि सारी आयु ज्ञान में कैसे चल पाऊँगा, आगे चलकर क्या विघ्न आयेंगे, क्या परिस्थितियाँ आयेंगी इत्यादि। एक ही बात पक्की हो गई कि बस भगवान मिला, उसे नहीं छोड़ना चाहे कुछ भी हो जाये। ज्ञान में आकर समझा कि भक्तों को भगवान नहीं मिला बल्कि बच्चे को बाप मिला और बाप को बच्चा मिला। मैं बाबा का दिल से बहुत शुक्रिया अदा करता हूँ कि बाबा ने छोटी आयु में ही अपना बनाया और बड़े अच्छे-अच्छे अनुभव कराये और मेरे मन-बुद्धि को बुराइयों में नहीं जाने दिया। ❖

विश्व कल्याण सरोवर

आपको सूचित करते हुए अति हर्ष हो रहा है कि सोनीपत में विश्व कल्याण सरोवर नाम से रिट्रीट सेन्टर बनाने का कार्य जो अगस्त, 2012 में प्रारंभ हुआ, तीव्र गति से चल रहा है। अगले छह महीने में प्रथम फेज (लगभग एक लाख स्कवेयर फीट निर्मित क्षेत्र) का निर्माण कार्य पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प है। आदरणीय भ्राता जगदीश जी की चाहना थी कि सोनीपत में प्यारे बापदादा को प्रत्यक्ष करने का एक ऐसा अद्भुत स्थान बने जो देश-विदेश के आकर्षण का केन्द्र हो। आइये हम भ्राता जगदीश जी की इस चाहना को मिल-जुलकर पूरा करें। विश्व कल्याण सरोवर के संबंध में आदरणीय वरिष्ठ भाइयों के शुभकामना संदेश नीचे वर्णित हैं – सम्पादक

भ्राता निर्वैर जी का शुभकामना संदेश

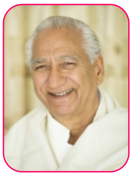

सोनीपत के बड़े प्रोजेक्ट के निमित्त जो भी भाई-बहनें हैं, सभी को बहुत-बहुत मुबारक क्योंकि आप सबकी तपस्या के फलस्वरूप बड़ा कंस्ट्रक्शन का कार्य शुरू हो रहा है। नया ट्रेनिंग सेन्टर बनेगा। आपके पास तो बड़ी रिमझिम हो जायेगी। सेवा और बढ़ती जायेगी, आपका भविष्य ऊँचा बनेगा। वर्तमान भी ऊँचा, भविष्य भी ऊँचा। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल जोन के भाई-बहनें जो निमित्त बनेंगे, उन्हें खास मुबारक हो और बाबा की तरफ से आशीर्वाद भी हो।

भ्राता रमेश जी का शुभकामना संदेश

बहुत खुशी की बात है कि जी.टी.रोड़ से 33 फीट का रास्ता मिल गया जिससे बहुत अच्छा भवन बन सकता है। हमारी यही शुभेच्छा है कि आप इतना अच्छा ट्रेनिंग सेन्टर बनायें जो पंजाब जोन को ट्रेनिंग, भट्ठी के लिए उपयोगी बने। जैसे ओ.आर.सी.दिल्ली की आत्माओं के काम में आता है, शांति सरोवर हैदराबाद और साउथ इंडिया की आत्माओं के काम में आता है, वैसे ही यह स्थान नॉर्थ इंडिया के काम में आये। मैं समझता हूँ कि सबका तन, धन, मन सब सफल हो जायेगा इस कार्य में। जितना जल्दी हो सके एक साल के अंदर समाप्त करें ताकि जल्दी उद्घाटन हो सके। आप जानते हैं, दिन-प्रतिदिन समय नाजुक आ रहा है, उससे पहले यह कार्य संपन्न हो जाये।

भ्राता बृजमोहन जी का शुभकामना संदेश

सोनीपत का स्थान सभी की प्रेरणा से लिया गया था और आखिर वह दिन आया आज जब इसका निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है। इसके कांट्रेक्टर बहुत अनुभवी हैं, ओ.आर.सी. की नई बिल्डिंग इन्होंने ही बनाई है। साथ ही इंजीनियर्स भी बहुत ही अनुभवी हैं। उम्मीद है कि यह स्थान शीघ्र अति शीघ्र बनकर तैयार होगा जैसे बाबा कहते थे, मिनट मोटर। जो कार्य सभी की राय से और एक मत होकर किया जाता है उसमें सफलता है ही। आप सभी अनुभवी बहन-भाई हैं, आप सबके सहयोग से यह कार्य हुआ ही पड़ा है। आप सभी मिलकर जल्दी ही इसे बनायेंगे और यह सफल होगा। बाबा भी ऊपर से फूल बरसायेगा और हम सभी भी आपके साथ हैं। आप सब जानते हैं कि इसमें हर प्रकार के सहयोग की आवश्यकता रहती है और वह सब मिलकर करेंगे ही और यह स्थान सेवा में सफल होगा ही। आपको किसी भी प्रकार का सहयोग चाहिए, धन का या हैण्ड्स का, हम सदा हाजिर रहेंगे।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org